संगत संसार

संरक्षक :

स. वीरेन्द्र सिंह जौहर नई दिल्ली

प्रबंधकीय मण्डल :

स. गुरुचरण सिंह गिल, जयपुर (अध्यक्ष)
श्री राकेश रिखी, रांची (मंत्री)
श्री गिरधारी लाल गांधी, दिल्ली (कोषप्रमुख)
श्री संतोष तनेजा, दिल्ली (सदस्य)
स. रविन्द्रपाल सिंह, दिल्ली (सदस्य)
श्री सुदर्शन सरीन, दिल्ली (सदस्य)

संपादकीय मण्डल :

डॉ. कुलदीप अग्निहोत्री, हिमाचल प्रदेश
स. जगजीवन जोत सिंह आनन्द, उत्तरांचल
डॉ. अवतार एस. शास्त्री, आंध्रप्रदेश
स. कुलवंत सिंह सचदेवा, ग्वालियर
स. राजेन्द्र सिंह, फरीदाबाद

संस्थापक : स्व. रमेश श्रोत्रिय

संगत संसार कार्यालय
4/28, W.E.A, सरस्वती मार्ग,
करोल बाग, नई दिल्ली-110005
दूरभाष : 24505289, फैक्स : 25728030
email: sikhsangat@khalsa.com/
website : www.sangatsansar.com

सूचना : 'संगत संसार' में छपी सामग्री से सम्पादकीय मण्डल का सहमत होना आवश्यक नहीं है। लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के निजी हैं। इस पत्रिका के प्रकाशन में अनेक विद्वानों के लेखों एवम् चित्रों का समायोजन किया गया है। संगत संसार सोसायटी उनकी आभारी है।

अज्ञानतावश मुद्रण में होने वाली सभी त्रुटियों के लिए हम गुरु महाराज व संगत से क्षमाप्रार्थी हैं। कृपया उदारतापूर्वक क्षमा करें।

'संगत संसार' में प्रकाशित किसी भी सामग्री से सम्बंधित पूछताछ व किसी भी प्रकार की कार्रवाई प्रकाशन-तिथि से तीन माह के अन्दर की जा सकती है। इसके बाद किसी भी प्रकार की पूछताछ व कार्रवाई पर हम जवाब देने के लिए बाध्य नहीं हैं। कार्रवाई का न्याय-क्षेत्र दिल्ली होगा। ●

पोखि तुखारु न विआपई कंठि मिलिआ हरि नाहु।
मनु बेधिआ चरनारबिंद दरसनि लगड़ा साहु।
ओट गोविंद गोपाल राइ सेवा सुआमी लाहु।
बिखिआ पोहि न सकई मिलि साधू गुण गाहु।
जह ते उपजी तह मिली सची प्रीति समाहु।
करु गहि लीनी पारब्रहमि बहुड़ि न विछुड़ीआहु।
बारि जाउ लख बेरीआ हरि सजणु अगम अगाहु।
सरम पई नाराइणै नानक दरि पईआहु।
पोखु सुहोंदा सरब सुख जिसु बखसे वेपरवाहु॥

(श्री गुरु अर्जुनदेव जी रचित 'बारहमाह मांझ' से)

गुरु साहिब जी पोष महीने के माध्यम से कहते हैं, जिनको जड़ता-रूपी शीत नहीं लगता उनके कण्ठ में हरि प्रियतम मिला है। जिनका मन वाहिगुरु-हरि के चरण कमलों में मिला है, उनको परमेश्वर का साक्षात्कार (दर्शन) हुआ है। उन्होंने गोविन्द-गोपाल स्वामी का सहारा लिया है और वे स्वामी की सेवा का लाभ लेते हैं। उनको विषयवासना स्पर्श नहीं कर सकती जो सत्संग में मिलकर प्रभु-गुण गाते हैं। जीव-रूपी स्त्री जिस परमेश्वर से उपजी थी उसी में मिल गई है, इसलिए सच्ची प्रीति का आनन्द अनुभूत हुआ है। पारब्रह्म ने जो जीव-रूपी स्त्री मन-रूपी हाथ से पकड़ ली है, वह फिर अलग नहीं होती। हरि प्रियतम अगम्य अथाह है, पर मैं लाख बार बलिहारी जाता हूँ। पंचम् गुरु नानक जी कहते हैं, कि जो नारायण के द्वार पर पड़े हैं, उनके लिए अकालपुरख-नारायण को लाज आयी है। परमात्मा शरणागत-रक्षक हैं, इसलिए द्वार पर पड़े लोगों के संबंध में सोचना स्वाभाविक है पोष में वही पुरुष सुख-सम्पन्न तथा शोभनीय है, जिसे बेपरवाह परमात्मा बख्श दे अर्थात् अभयदान दे। ●

सम्पादकीय

ग्राम स्वराज्य ही विश्व मंगल का आधार

- डॉ. कुलदीप चंद अग्निहोत्री

अब ऐसा स्वीकार किया जाने लगा हैं कि विश्व में मानवीय मूल्यों के हो रहे ह्रास, नकारात्मक वृत्तियों के विकास का कारण ग्राम संस्कृति और ग्राम की स्वायतता का नष्ट हो जाना ही है। यह बात केवल भारत के संदर्भ में ही नहीं कही जा रही, बल्कि इसे पूरे विश्व के संदर्भ में भी कहा जा सकता है। आज यूरोप में इस बात पर सर्वाधिक चिंता व्यक्त की जा रही है कि वहां हिंसा बढ़ रही है। छोटी उम्र के बच्चे ही अपराध कार्यों में फंस रहे हैं। परिवारों में आपसी रिश्ते टूट रहे हैं जिसके कारण परिवारों के अस्तित्व पर ही संकट की स्थिति आ गई है। भोगवादी प्रवृत्ति बढ़ रही है तमाम तकनीकी उन्नति के बावजूद व्यक्ति पशुता की ओर जा रहा है। यूरोप में तो नगरीकरण की प्रक्रिया इतनी तेजी से बढ़ी है कि वहां ग्रामों के लोप होने का खतरा पैदा हो गया है। उसके देखा-देखी एशिया के अनेक देशों में भी नगरीकरण की प्रक्रिया ग्रामों को लीद रही है। थाईलैण्ड में तो मानो सारे देश की आबादी राजधानी बेंकॉक में ही सिमटने का प्रयास कर रही है। यही स्थिति मलेशिया की है। अब तो तमाम प्रवृत्तियां भारत में भी दिखाई देने लगी हैं। इसलिए भारत में अनेक प्रबद्ध लोग देश के सांस्कृतिक भविष्य को लेकर चिंता प्रकट कर रहे है।

यूरोप में ग्राम और परिवार के विघटन व नगरों के असमाजिक जीवन की शुरुआत औद्योगिक क्रान्ति से मानी जा सकती है। इस प्रक्रिया को तेज करने में प्रथम विश्व युद्ध और द्वितीय विश्व युद्ध ने भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। इन युद्धों से यूरोप के लोगों को जीवन के क्षण भंगुर होने का अहसास बहुत तेजी से हुआ और भय की इस काली छाया में भोग की पाश्विक वृत्तियां जागृत हुईं। औद्योगिकरण की यह प्रक्रिया ज्यों-ज्यों भारत में फैलती गई त्यों त्यों उससे जुड़ी तमाम बिमारियों का यहां आना भी स्वाभाविक ही था। कृषि प्रधान आर्थिक व्यवस्था में ग्राम एक ईकाई के रूप में सुरक्षित ही नहीं रहता, बल्कि परिवार की संस्था भी अपनी उपयोगिता बनाए रखता है। कृषि आधारित व्यवस्था में संयुक्त परिवार ज्यादा उपयोगी माने जाते हैं और सामाजिक संस्कृति के मूलाधार सुरक्षित रहते हैं। कृषि आर्थिकता में गाय की उपयेगिता सर्वाधिक होती है। यदि इसको और व्यापकता में कहा जाए तो कृषि और पशु परस्पर आधारित है और दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। फिर गाय तो भारत में केवल आर्थिकता से जुडी हुई नहीं है बल्कि देश के सांस्कृतिक परिवेश में भी उसका गहरा स्थान है। परन्तु जब धीरे-धीरे छोटे किसान समाप्त होने लगे और उनके स्थान पर हजारों एकड़ के जमींदार या उद्योगपति आ गए तो उन्होंने कृषि करण को ही मशीनों और मजदूरों के प्रयोग से एक बड़े उद्योग में ही बदल दिया। इससे कृषि कर्य में से सृजन का आनन्द समाप्त हो गया। गाय और अन्य पशु अनुपयोगी हो गए और गांव की आर्थिकता की रीढ़ की हड्डी टूट गई। यूरोप में बड़े स्तर पर पशु वध शुरू हो गया और भारत में गोवंश की दुर्दशा सबके सामने है। गोग्राम की प्रासांगिता पर प्रश्नचिह्न लग जाने से भारत का मंगल या फिर विश्व मंगल की कल्पना भला कैसे की जा सकती थी?

महात्मा गांधी ने शायद इस स्थिति को बहुत पहले ही पहचान लिया था वे भविष्यदृष्टा थे। उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में ही हिन्द स्वराज लिख कर इस बात पर जोर देना शुरू कर दिया था, कि भविष्य में भारत के विकास का मूलाधार ग्राम स्वराज ही हो सकता है। गऊ के बारे में गांधी की चिंता तो सर्वज्ञात ही है गौरक्षा के लिए वे किसी भी सीमा तक जाने को तैयार थे गांधी के सपनों का भारत वह था जिसमें स्वावलंबी गांव सबसे छोटी ईकाई हो नगरीकरण का गांधी जी विरोध करते थे, यही कारण था कि वे बड़ी मशीनों के खिलाफ थे। वे जानते थे कि

बड़ी मशीन गांव को खाएगी और नगरों में झुग्गी-झोपड़ियों का जंगल खड़ा करेगी गांधी जी का मानना था कि मशीन मानव मंगल के लिए है न के मानव को गुलाम बनाने के लिए गांधी जी ऐसा मानते थे, कि भारत का सांस्कृतिक प्रवाह ग्राम से होकर जाता है। यदि ग्राम उजड़ गया या फिर स्वावलंबी न रहा तो संस्कृति की यह अवछिन्न धारा अपने आप सूखने लगेगी। दीन-हीन ग्राम या फिर याचक की मुद्रा में खड़ा ग्राम भारत का आधार नहीं बन सकता। भारत का आधार तो स्वावलंबी ऊर्जा वान ग्राम ही बन सकता है। दुर्भाग्य से गांधी के उत्तराधिकारी पण्डित जवाहर लाल नेहरू की इस ग्राम स्वराज्य में कोई आस्था नहीं थी इसलिए नेहरू ने हिन्द स्वराज को गांधी के सामने ही अप्रासांगिक करार दिया था नेहरू मानते थे आधुनिक युग में जिस मशीनी क्रान्ति की शुरूआत हुई है उसमें ग्राम स्वराज्य की कल्पना करना ही दखियानूसी है। गौरक्षा की बात उनकी दृष्टि में मजहबी कट्टरता से ज्यादा कुछ नहीं थी।

लेकिन इसे अजब संयोग मानना होगा कि यूरोप के कई देशों ने तथाकथित आधुनिकता की बिमारियों से छुटकारा पाने के लिए हिन्द स्वराज पर गंभीरता से चर्चा हो रही है। यूरोप में वैकल्पिक अर्थशास्त्र की तलाश में जुटे विद्वानों ने हिन्द स्वराज को विश्व मंगल के लिए प्रासांगिक माना है। यह वर्ष हिन्द स्वराज के सौ साल पूरे होने का वर्ष है और यह अजीब संयोग है कि इसी वर्ष भारत के लोग देश भर में विश्व मंगल गौ ग्राम यात्रा का आयोजन कर रहे हैं। इस यात्रा का मूलाधार भी ग्राम का स्वराज्य और गौवंश की रक्षा ही है। एक बात और ध्यान में रखनी होगी कि इस यात्रा ने गौ और ग्राम को आधार बनाकर भारत मंगल की कामना नहीं की है बल्कि विश्व मंगल की कामना की है। यहां एक और मुद्दे पर भी ध्यान देना होगा नए अर्थशास्त्र में बडी मशीन उत्पादन को बढ़ाती है और आधुनिकता की अधकचरी समझ इस उत्पादन के ज्यादा से ज्यादा भोग को ही सुख और मंगल का कारण मानती है। जबकि सुख और मंगल की यह अवधारण वास्तविकता से कोसों दूर है। भोग सुख का एक कारक हो सकता है लेकिन वह एकमात्र कारक नहीं है। सुख के अनेक अन्य कारक भी हैं लेकिन आधुनिक अर्थशास्त्र के विद्वान इन अन्य कारकों का नोटिस लेने के लिए तैयार नही है। उनका तर्क यह है कि इन कारकों को किसी भी ढंग से नापा नहीं जा सकता। लेकिन यह तर्क भीतर से खोखला है आप किसी चीज को नाप नहीं सकते इसका अर्थ यह नहीं है कि उसका अस्तित्व ही नहीं है। यह मनुष्य जीवन की, उसके सुख और मंगल की एक पक्षीय विवेचना है। दीन दयाल उपाध्याय और महात्मा गांधी ही समग्र एकात्म विकास की चर्चा करते थे। उसी से विश्व मंगल की अवधारण उत्पन्न होती है।

आज जबकि पूरा विश्व चौराहे आ खड़ा हुआ है भौतिक उन्नति ने उसे विनाश के रास्ते पर मोड़ दिया है। ग्राम का विनाश तो हो ही चुका है अब मानव अपने विनाश की राह पर चल रहा है। ऐसे मौके पर भारत में शुरू हुई विश्व मंगल गौ ग्राम यात्रा जो 30 सितम्बर को कुरुक्षेत्र से प्रारम्भ हुई, अत्यंत प्रासंगिक हो गई है। यह यात्रा 17 जनवरी, 2010 को नागपुर में समाप्त होगी। यह यात्रा सम्पूर्ण विश्व में एक नई बहस को जन्म देगी ऐसा माना जा सकता है। 'चलों ग्राम की ओर' का यह नारा वास्तव में एक बार फिर मंगलमय, सुख-समृद्धि और सम्पन्न भारत की कामना करता है। इस कामना के दो ही मूल स्तम्भ है गौ और ग्राम और दोनों एक-दूसरे से गर्भनाल से बंधे हुए हैं। पिछली शताब्दी के उत्तरार्ध में जयप्रकाश नारायण ने समग्र क्रान्ति का उद्घोष किया था उस उद्घोष के चलते सत्ता परिवर्तन तो हुआ लेकिन समग्र क्रान्ति का सपना टूट गया। विश्व मंगल गौ ग्राम यात्रा यह आह्वान भी एक नई क्रान्ति का द्योतक है। परन्तु यह क्रान्ति समग्र क्रान्ति से भी गहरी क्रान्ति होगी। क्योंकि इसमें भारतीय संस्कृति के मूलाधारों को प्रस्थापित करने का प्रयास होगा।●

॥आनंदु साहिब॥

प्रिंसीपल, **दिलीप गोगटे**, नान्देड़

भक्ति एक छोटी सी क्रिया नहीं है। वह जीवन के सभी व्यवहारों को स्पर्श करने वाली एक पद्धति है। किसी भी कार्यालय में चपरासी का पद भी योग्यता के सिवा नहीं मिलता। ब्रह्मांड के स्वामी की अनुभूति पात्रता के बिना कैसे संभव है? मंदिर, गुरुद्वारा मे जाकर मत्था टेका, किसी स्तोत्र का पाठ किया, थोड़ा सा जप किया और भक्ति हो गई, ऐसी अगर किसी की धारणा है, तो वह गलत है। ये क्रियाएं भक्ति संकल्पना का एक छोटा हिस्सा जरूर हैं। पर भक्ति संकल्पना इतनी संकीर्ण नहीं है।

भक्ति क्यों करनी चाहिए? ऐसा प्रश्न कुछ लोग पूछते हैं। जिसका उत्तर है, मन को शांति प्राप्त होने के लिए। आज कल जीवन बड़ा जटिल हुआ है। अनेक प्रकार के तनाव, उत्कंठाएं, अभिलाषाएं हमारे मन में होती हैं, जिस कारण मन की शांति खत्म होती है। हमें विविध तरह के मोह आकर्षित करते हैं, जिसमें से कुछ अनैतिक स्वरूप के और कुछ समाज तथा देशहितविरोधी भी हो सकते हैं। कुछ मोह मन को अपवित्र भी बनाते हैं। भक्ति करने से मनुष्य इस प्रकार के मोह से बचता है, और मन पवित्र होता है। श्री गुरु अमरदास जी कहते हैं, **पवितु होए से जना जिनी हरि धिआइआ।** (रामकली म. 3 अं. 920) जो भक्ति करते हैं, उनके मन पवित्र बनते हैं।

पानी की गंदगी दूर करने के लिए पानी छाना जाता है, उसमें फिटकरी घुमाई जाती है। उसी तरह मन की गंदगी दूर की जाती है, जिसमें मन पवित्र बनता है।

आज के जीवन में अनिश्चितता है, जिस कारण मन में डर बना रहता है। पर भक्त को ऐसा विश्वास होता है कि प्रभु उसकी रक्षा करेंगे, उसकी अड़चने दूर करेंगे। इसलिए भक्त के मन में डर नहीं रहता। निर्भय प्रभु का भक्त निर्भय बनता है। श्री गुरु अमरदास जी की पवित्र निम्न रचना से यही बात ध्यान में आती है :

ए मन मेरिया तू सदा रहु हरि नाले।
हरि नालि रहु तू मंन मेरे दूख सभि विसारणा।
अंगीकारु ओहु करे तेरा कारज सभि सवारणा।
सभना गला समरथु सुआमी सो किउ मनहु विसारे।
कहै नानकु मंन मेरे सदा रहु हरि नाले॥2॥

हे मेरे मन ! तू सदा हरि से प्रीत लगाए रख। ऐसाकरने से तू सब दुखों को भूल जायेगा। प्रभु तेरे कामों को ठीक तरह से संवारते हैं और सब प्रकार की सहायता करते हैं। प्रभु सब प्रकार से समर्थ है तू उन्हें क्यों भूलता हैं?

प्रभु का सहारा यह एक बड़ी शक्ति है। इस विश्वास के कारण मनुष्य काम करते समय डगमगाता नहीं। प्रारंभिक अवस्था में इच्छापूर्ति के लिए भक्ति की जाती है। पर सद्ग्रंथों के पठन से, सत्संग से कामनिक भक्ति धीरे-धीरे कम होती है। प्रभु के प्रति प्रेम निर्माण होता है। श्री तुकाराम महाराज ने भक्ति के संबंध में निम्न सुंदर विचार व्यक्त किये है।

'हेचि थोर भक्ति आवडते देवा। संकल्पावी माया संसाराची'। माया-मोह से छुटकारा पाना यही भक्ति है, जो प्रभु को भाती है। 'भक्ति ते नमावे जीव जंतु भूत। शांतवूनि ऊत काम क्रोध'। सभी जीव जंतुओं के साथ नम्रता से व्यवहार करना यही भक्ति है। इस भक्ति में काम-क्रोध आदि विकारों का शमन आवश्यक है। 'भक्तिची ते जाती ऐसी। सर्वस्वासी मुकावे'। अपने सर्वस्व का समर्पण करके प्रभु को अपनाना यह भक्ति है।

इन विचारों से एक बात स्पष्ट होती है कि भक्ति यह मन की एक अवस्था है। तुकाराम महाराज ने भक्ति करने का मतलब किस ग्रंथ का पाठ करना, मंदिर में कितनी परिक्रमा करना, कितने जप करना ऐसा कुछ भी बताया नहीं है। माया और षड्विकारों का त्याग करो ऐसा उन्होंने कहा है।

आदर्श भक्ति की संकल्पना समझ लेनी चाहिए, क्योंकि यदि हम उस मानसिक अवस्था में नहीं है। तो वह हमारा गंतव्य होगा इसी संदर्भ में महर्षि नारद जी द्वारा की भक्ति की व्याख्या याद आती है। उन्होंने कहा है, 'सात्वस्मिन् परम प्रेमरूपा।' भक्ति परम प्रेमस्वरूप है। अंत:करण में असीम प्रेम होना यही भक्ति का लक्षण है। श्री मधुसूदन सरस्वती जी ने 'चित्त द्रवित होना' ऐसी भक्ति की व्याख्या की है। ये सभी व्याख्याएं धर्मातीत हैं। धर्म कोई भी हो, प्रभु से प्रेम करना और विकारों को त्याग करना सभी धर्मों में आवश्यक माना गया है। क्रमश.....

सेवा कर गौवंश की, एक पंथ दो काज।
उन्नति होवे देश की, स्वर्ग मिलन की आस।।

– **स. सुरिन्दर सिंह नामधारी**, बाजपुर

जय सर्वदेवमयी गऊमाता की। यदि आज हम विचार करके देखें तो दुनियां के बदलते परिवेश की यही तस्वीर दिखाई देती है कि पूरे विश्व में कोई भी देश दूसरे राष्ट्र की तरक्की करते देखकर खुश नहीं है इसलिए अधिकतर देशों के अपने पड़ोसियों के साथ अच्छे संबंध नहीं है बल्कि किसी न किसी विषय को लेकर उनके आपस में विवाद चलते रहते है जिसके कारण उनके बीच तनाव की स्थिति बनी रहती है। ठीक यही हालात समाज में भी देखने को मिलते हैं आज लोगों की यह एक धारणा बन गई है कि वे अपने पड़ोसी या परिवार के लोगों को तरक्की करते देखकर अन्दर ही अन्दर जलन महसूस करते है और एक दूसरे के काम में रुकावट डालने में उन्हें आनन्द आता है। यह हालात देखकर पता चलता है कि आज समाज में बुराई के प्रति लोगों को टेस्ट (झुकाव) बढ़ता जा रहा है।

हमारा देश भी विश्व में सोने की चिड़िया के नाम से विख्यात था यहां नीति, धर्म, दया, सत्य और अहिंसा के बल पर शासन व्यवस्था चलती थी। सदियों से अथितियों को भगवान मानकर उसका आदर सत्कार करने की हमारी संस्कृति और परम्परा रही है। हमारी इसी परम्परा का नाजायज फायदा उठाकर पहले हमारे ऊपर मुगलों ने आक्रमण करके सन् 1526 से 1858 तक शासन किया उसके बाद सन् 1858 से 1947 तक अंग्रेजों ने हमारे ऊपर शासन किया। इस तरह वर्षों की लम्बी गुलामी की बेड़ियों से आजादी दिलाने के लिए मां भारती के हजारों बहादुर क्रांतिकारी, देशभक्त सपूतों ने अपने प्राणों की आहुति देकर सन् 1947 में हिन्दुस्तान को आजादी दिलाई जिसके लिए भारत का बच्चा-बच्चा उन शहीदों को हृदय से नमन करता है तथा राष्ट्र के लिए उनके बलिदान को सदैव ऋणी रहेगा। वर्षों के लम्बे संघर्षो के बाद 1947 में भारत आजाद तो हुआ लेकिन हमारे तत्कालीन नेताओं के व्यक्तिगत स्वार्थों के कारण इस आजादी की कीमत हमें मुसलमानों की मांग पर धर्म के आधार पर देश का बंटवारा करके पाकिस्तान के निर्माण के रूप में चुकानी पड़ी। कुछ नेताओं की जिद के कारण सरदार पटेल जैसे राष्ट्रभक्तों को किसी तरह सीने पर पत्थर रखकर इस बंटवारे को मजबूरी में स्वीकार करना पड़ा।

अभी देशवासियों ने आजादी की हवा में सांस लेना आरंभ किया ही था कि सन् 1962 में हमारे पड़ोसी देश चीन ने हमारे ऊपर आक्रमण कर दिया। अचानक हुए इस आक्रमण से एक बार तो हमारी सरकार हक्की बक्की रह गई क्योंकि हमारी फौज के पास आधुनिक हथियारों की कमी थी किन्तु हमारी सेना के जवानों ने सीमा पर जिस अदम्य साहस का परिचय देकर दुश्मनों से लोहा लिया तथा चीनी सैनिकों को वापस खदेड़ा उसके बाद पूरे विश्व में भारतीय सेना के जवानों की चर्चा विख्यात हो गई। इधर भारत से अलग होने के बाद भी पाकिस्तानी नेताओं को चैन नही मिला और वह कश्मीर को अपनी सीमा में मिलाने के लिए आजाद कश्मीर की लगातार मांग करते हुए नापाक कोशिशें करता रहा तथा कश्मीरी मुजाहिद्दीन संगठन (कश्मीर नागरिकों) के नाम पर भारतीय सीमा में पराजित होते देख पाकिस्तान ने अपनी सैनिक ताकत को बढ़ाते हुए आधुनिक पैटन-टैंक खरीदे जिनके विषय में यह विख्यात था कि विश्व में

उनकी मजबूती और मारक क्षमता के मुकाबले कोई ताकत नहीं है। विदेशी पैटन टैंक प्राप्त करने के बाद पाकिस्तानी हुक्मरान फूले नहीं समा रहे थे। आखिर सन् 1965 में उसने हिन्दुस्तान के युद्ध शुरु कर दिया।

जब पाकिस्तान द्वारा भारत पर हमला किया गया और पैटन-टैंक सब कुछ तहस-नहस करते हुए आगे बढ़ते रहे थे तब हमारी सेना के रणबाकुरों ने अपनी छाती के नीचे ग्रेनेड लगाकर उन फौलादी पैटन-टैंक के नीचे लेटकर उन्हें तोड़ा था, जिनके विषय में कहा जाता था कि विश्व में उनका कोई तोड़ नहीं है। पाकिस्तान से युद्ध में विजय प्राप्त करने के बाद हमारी सेना ने दुनियां को दिखाने के लिए उन पैटन-टैंक की नुमाईश लगाकर दिखाया था कि यही वो टैंक है जिन्हें हमारे जवानों ने अपनी ताकत के बल पर तहस-नहस कर दिया। उस युद्ध के बाद यूरोप की सेना के विशेषज्ञों द्वारा इसकी रिसर्च की गई कि भारतीय जवानों ने हमारे शक्तिशाली टैंकों को तोड़ा तो कैसे तोड़ा, तब उन्हें पता चला कि भारतीय सेना के जवानों ने मानव बम बनाकर (अपनी छाती पर ग्रेनेड बांधकर) टैंकों को तबाह किया। चीन और पाकिस्तान के साथ हुई दो लड़ाईयों में विजय प्राप्त करने के बाद से दुनियां के अन्य देशों की नजरों में हमारा देश कांटे की तरह खटकने लगा कि बिना आधुनिक हथियारों के जब हिन्दुस्तान को जवान अपने विरोधियों के दांत खट्टे कर सकता है तो भविष्य में अपनी ताकत के बल पर वह पूरे विश्व पर शासन भी कर सकता है। इसी सोच के आधार पर हमारे देश को काबू करने के लिए विदेशियों द्वारा तरह-तरह के षड्यंत्र किये जाते रहे।

विदेशी ताकतों ने अनुसंधान (रिसर्च) करके पता लगाया कि भारतीय किसान अपने खेतों में जिस गोबर की खाद का प्रयोग करते है उसने यहां की धरती की उपजाऊ शक्ति कभी कमजोर नहीं होती तथा गोबर की खाद से जो अन्न व खाद्य पदार्थ पैदा होता है वह बहुत पौष्टिक और ताकतवर होता है इसलिए यहां के लोगों में विशेष उर्जा होती है इस बात को ध्यान में रखकर विदेशी ताकतों ने विचार किया कि क्यों न यहां की आबादी को, यहां के जवानों को, और यहां की खेती की उपजाऊ जमीन की शक्ति को समाप्त करने के लिए ऐसी रणनीति बनाई जाए कि ना रहेगा बांस, न बजेगी बांसूरी ! अर्थात्, हमारी धरती को बंजर करने के लिए रासायनिक खाद और जहरीले कीटनाशकों का निर्यात किया जाए। इस षड्यंत्र की आड़ में उन्होंने दोहरा लाभ उठाया। एक तो उनकी खाद का आयात करने के बदले हमारे देश का धन विदेशों में चला गया, दूसरा जो उनका मूल उद्देश्य हमारी जमीन और जवान को बर्बाद करने का था उसमें वे सफल होने लगे, क्योंकि जब जवानों में ताकत ही नहीं रहेगी तो वह लड़ेगा कैसे। अपनी इस रणनीति को कारगर बनाने के लिए उन्होंने हमारे राजनेताओं को धन का लालच देकर अपनी रासायनिक खाद और कीटनाशक दवाएं हमारे देश में निर्यात करना शुरु कर दिया। यह देशवासियों के लिए सोचने का विषय है कि एक तरफ हमारे कुछ नेता देश का धन चूसने में लगे है दूसरी तरफ विदेशी खाद के आयात से हमारे देश का धन विदेशों में जा रहा है। यहां इस बात का उल्लेख करना आवश्यक है कि जो रासायानिक खाद और कीटनाशक विदेशों से हमारे देश में निर्यात किया जाता है उसे वे अपने यहां इस्तेमाल नहीं करते क्योंकि वे उसको खेती में प्रयोग करके इसके दुष्परिणाम देख चुके है कि इससे धरती बंजर हो जाती है और रासायनिक खाद से पैदा किए गए अनन्न, फसलें एवं खाद्य पदार्थों का सेवन करने से मनुष्य को कैंसर, टयूमर जैसी प्राणाघातक बिमारियां होने का खतरा बढ़ जाता है। इसके साथ ही विदेशियों ने अपनी रिसर्च में यह भी पाया कि प्रत्येक भारतीय व्यक्ति चाहे उसकी आर्थिक स्थिति कितनी भी कमजोर क्यों न हो लेकिन उसके खूंटे पर कम से कम एक गाय अवश्य बंधी पाई गइ जिसके पौष्टिक और स्वास्थ्य-वर्धक दूध, घी, दही और छाछ का सेवन करने से ही भारतीय जवान इतने हष्ट-पुष्ट और ताकतवर है तथा इन्हीं गायों के बछड़े और बैल भारतीय किसान के खेती, कास्तकारी में हल जोतने, रहट तथा गुड़ और तेल के कोल्हू चलाने और बैलगाड़ी से बोझा ढ़ोने इत्यादि सभी कार्यो में भारतीय गौवंश ही मुख्य रीढ़ की हड्डी है। इसलिए विदेशियों ने भारतीय गौवंश की उपयोगिता को समाप्त करने के लिए बाजार में सिंथेटिक (यूरिया से निर्मित) दूध के प्रयोग को बढ़ावा दिया तथा गऊमाता की चर्बी व हड्डियों से घी बनाकर बाजार में

बेचा गया, खेती किसानी के काम में ट्रैक्टर और मशीनीकरण को बढ़ावा देकर बैलों की उपयोगिता को समाप्त करने का षड्यंत्र किया गया। हमारे पूजनीय गौवंश को कत्ल कराने के लिए उसके मांस और चमड़े की विश्व में सबसे अधिक कीमत लगाई गई। इस घृणित पाप (गौंवश के मासं व चमड़े) को विदेशों में निर्यात करने के लिए भी हमारे नेताओ को विदेशी मुद्रा भण्डार के रूप में धन कमाने का लालच दिया गया। इस प्रकार हिन्दुस्तान की मैनपॉवर हमारी पूज्य गऊमाता, धरतीमाता और हमारे देश के जवानों को खोखला करने की जो पॉलिसी विदेशी ताकतों ने बनाई थी उसमे आज वे सफल होते दिखाई दे रहे है। क्योंकि रासायनिक खाद के प्रयोग से हमारी जमीनें बंजर होती जा रही है, मांस व चमड़े का विदेशों में निर्यात करने के कारण प्रतिदिन लाखों की संख्या में गाय-बैलों का बेदर्दी से बूचड़खानों में कत्ल हो रहा है।

समाज में आए बदलाव को देखकर आज यह दावे किए जा रहे है कि हमारा देश बहुत तरक्की कर रहा है लेकिन सत्यता यह है कि देश अन्दर से दीमक की तरह खोखला हो चुका है। हमारी संस्कृति और मान्यताएं कमजोर पड़ती जा रही है। भारतीयता को त्यागकर पाश्चात्य संस्कृति की नकल करने में हम अंधे हो गए है, यह सब विदेशी सभ्यता और खान-पान की नकल का परिणाम है। बे-मौसम फल और सब्जियां पैदा की जाती है जिसने हमारे खान-पान को बिगाड़ दिया है। इस प्रकार के खाद्य पदार्थों से शारीरिक और बौद्धिक विकास नहीं होता है, आज खाने-पीने की सभी चीज में मिलावट हो रही है नई नई बीमारियों पैदा हो रही है जिसका कारण खेती में रासायनिक खाद का प्रयोग करना है इसलिए जवान होने पर हमारे युवाओं में आज पहले जैसी शक्ति व शरीर का गठन दिखाई नहीं देता। विदेशी ताकतों के साथ-साथ आज हमारे देश को अंबानी जैसे उद्योगपतियों ने भी अपने मकड़जाल में फंसाना आरंभ कर दिया है। ये पूंजीपति लोग जो पहले जहाज, मोबाईल फोन, पैट्रोल पम्प, शेयर मार्किट, बहुमंजिला इमारतें, शॉपिंग मॉल का निर्माण और फैक्ट्रियों में अनेक तरह के उपकरण और मशीनें बनाकर शहरों में अपना व्यापार करते थे उन्होंने अब हमारे गांवों को भी अपने चंगुल में फंसाना आरंभ कर दिया है। इन उद्योगपतियों ने हमारे किसानों को धन का लालच देकर उनके पुरखों की खेती की जमीन को खरीदना शुरु कर दिया है। इन्होंने यह रणनीति बनाई है कि पहले किसानों से उनकी जमीन खरीदकर उन्हें बेरोजगार बना दिया जाए और फिर उन खेतों में पैदा हुए अनाज व सब्जियों को अपने एयरकंडिशन शॉपिंग मॉल में मनमाने दामों पर बेचा है। आज जब सभी वस्तुएं यही लोग बना रहे है तो इस देश का किसान, मजदूर और गरीब आदमी कहां जाए इसलिए अब इन उद्योगपतियों को भिखारियों का, नाले, मैनहॉल सफाई करने वालों के भी ठेके ले लेने चाहिए। ये उद्योगपति जहाज, मोबाईल फोन, पैट्रोल पम्पों, मशीनों का व्यापार यहां करते है तथा देश के किसानों की जमीन खरीदकर अन्न, फल और सब्जियां बेचकर धन यहां कमाते हैं और विदेशों में आलीशान बंगले बनाते हैं और वहां अपनी सुख-सुविधा के साधन बनाकन ऐश करते हैं। इस प्रकार ये लोग गरीब जनता का धन चूसकर देश का पैसा विदेशों में ले जा रहे है और भारत के किसानों को नोटों की गड्डियां दिखाकर उनकी जमीन से बे-दखल किया जा रहा है जिसके परिणाम थोड़े ही समय बाद हमारे सामने आने लगेंगे जब दुनियां का पेट भरने वाले भारतीय किसान की संतान के सामने भूखे मरने की नौबत आएगी क्योंकि अपनी जमीन बेचने के बाद आखिर उन्हें इन उद्योगपतियों के यहां मजदूरी करनी होगी जिससे दो वक्त का पेट भरना भी संभव नहीं होगा। क्योंकि देश केवल मशीन से या वैज्ञानिकों से नहीं चलता, देश आदमी से चलता है जब पेट ही भूखा रहेगा तो देश आगे कैसे बढ़ेगा। विज्ञान कभी भी गऊमाता से बड़ा नहीं हो सकता क्योंकि गऊमाता घास खाकर हमें पौष्टिक दूध, घी, मक्खन, दही, गोबर की खाद और गोमूत्र के रूप में औषधियां देती है किंतु विज्ञान द्वारा किसी भी तरह घास से इन पदार्थों का निर्माण करना असंभव है इसलिए गऊमाता विश्व में सर्वोपरि, सर्वोत्तम एवं पूजनीय है।

यदि हमारी सरकार द्वारा कारखानों के निर्माण में लगने वाले धन का 50 प्रतिशत हिस्सा भी गऊमाता के लिए लगाया जाता तो आज हमारी पूज्य गऊमाता की यह

स्थिति नहीं होती। जैसे यदि गौवंश के गोबर-गोमूत्र का उपयोग सही और आधुनिक ढंग से किया जाता, उसके गुणों के विषय में शोध किया जाता, उनके उपयोग के लिए नई तकनीक विकसित की जाती तो आज कृषि उत्पादन की स्थिति बहुत भिन्न होती। क्योंकि किसान जो खेती के साथ-साथ गोपालक भी है उन्हें खेती करने में कोई लागत ही नहीं लगानी पड़ती, लागत न आने के कारण अनाज और अन्य उत्पादन महंगे नहीं होते। सरकार को किसी प्रकार की कोई आर्थिक सहायता, खाद अथवा बीज पर नहीं देनी पड़ती, जनता पर टैक्स का बोझ नहीं पड़ता, जिसके परिणाम स्वरूप गरीबी और महंगाई दोनों ही नियंत्रण मे रहते और विकास के साथ-साथ देश में समृद्धि भी बढ़ती। उदाहरण के लिए जैसे पैतिस ग्राम गोबर से एक एकड़ भूमि को उपजाऊ बनाने की यह विधि है जिसे कुछ समय पहले न्यूजीलैंड के कृषि तथा पशु वैज्ञानिक पीटर प्रोक्टर जी जब भारत आए तो उन्होंने यह आश्चर्यजनक प्रयोग किया। उन्होंने एक दुधारू गाय के गोबर को मृत गाय के सींग में भरकर सर्दी से पहले जमीन में गाड़ दिया तथा पांच-छः महीने बाद उसे निकालकर एक हवा बन्द डिब्बे में रख दिया। उसमें से 35 (पैंतीस) ग्राम गोबर को निकालकर दस लीटर पानी में मिलाकर घोल बनाया और उसका एक-एकड़ भूमि पर छिड़काव कराया, जिससे वह धरती उपजाऊ और हरी-भरी हो गई। हमारे किसान भाई भी इस प्रयोग को अपने खेतों में करके देखें, इसके बहुत अचदे परिणाम सामने आऐंगे। यदि हम गऊमाता के गोबर की उपयोगिता को समझ लें तो हमारे देश से हर बीमारी, गरीबी और बेरोजगारी स्वयं समाप्त हो जाएगी। इसलिए प्रत्येक किसान भाई का यह कर्तव्य बनता है कि वह अपनी जमीन को न बेचे, खेती में रासायनिक खाद का प्रयोग न करके देशी गोबर की खाद डालें, अपने घर में गोवंश रखकर उसकी सेवा करे तथा अपनी भारतीय परम्परा, संस्कृति, रीति-रिवाजों को अपनाए तभी हम अपने देश को फिर से दुनियां में वही स्थान दिला पाएंगे जिसे हमारे पूर्वजों ने स्थापित किया था।-**चौ. महेन्द्र सिंह टोकस**

संगत संसार (मासिक पत्रिका) पाठकों के लिए विशेष ध्यानार्थ

गुरबाणी का 100% हिन्दुस्थानियों तक प्रकाश पहुंचाने के संकल्प से प्रेरित 'संगत संसार' मासिक पत्रिका को संतों-विद्वानों-प्रचारकों-आम जागरूक जन एवं गुरसिखों का आशीर्वाद प्राप्त है। गत वर्ष 300 साला गुरता गद्दी वर्ष में संगठन की महान गतिविधियों, भोपाल सांझीवालता प्रशिक्षण वर्ग की अभूतपूर्व सफलताओं में प्रयत्नरत रहने के कारण अपने में से हजारों पाठकों की **वार्षिक माया सेवा** (रुपये 100/- मात्र) कब समाप्त हो गयी, पता ही नहीं चल सका। अतः आओ, इस कमी को जानने के बाद हम अपनी वार्षिक **माया सेवा** भेजकर 'संगत संसार' की आर्थिकता को दृढ़ता प्रदान करें। पाठक बंधु इस प्रकार से योगदान कर सकते हैं-

1. आपकी पत्रिका एक महीने से अथवा अधिक समय से सदस्यता के नवीनीकरण न होने के कारण प्राप्त नहीं हो रही हैं, तो अतिशीघ्र मनीआर्डर, बैंक ड्राफ़्ट से अपने डाक व पते सहित रकम भेजें।
2. यदि अगर आपके पास निःशुल्क (Complimentary) प्रति लगातार पहुंच रही हैं, तो क्या आप नियमित सदस्य बनने की सोचेंगे? इसके लिए अपनी **वार्षिक माया सेवा** (रुपये 100/- मात्र) भिजवाने की कृपा करेंगे।
3. आप अत्यन्त व्यस्त हैं। फिर भी, क्या 'संगत संसार' मासिक पत्रिका के अपने आस-पास के सम्पर्क में कम से कम 25 सदस्य बनवाकर, धन संग्रह करके, नाम व पता लिखकर, ड्राफ़्ट भिजवाकर गुरवाणी प्रसार में हमारे सहयोगी बन सकते हैं?
4. क्या हम आजीवन सदस्य रुपये 2000/- देकर बन सकते हैं?

बिहारी लाल
राष्ट्रीय सदस्यता प्रमुख

अविनाश जायसवाल
राष्ट्रीय महामंत्री संगठन

पराया हक न खाने का संदेश देने वाले-श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी

व्यवहारिकता में मनुष्य ने ईमानदारी से जीवन यापन करना चाहिए। अक्सर यह देखा गया है कि लोग उधार लेकर वापस करने में आनाकानी करते हैं, जो सही नहीं है। सभी संतों महापुरुषों ने ईमानदारी से जीवन व्यतीत करने का उपदेश दिया है। गुरबाणी भी फरमाती है-'उसतति मन महि करि निरंकार, करि मन मेरे सति विउहार' अर्थात् सिमरन के साथ-साथ जीव को सत व्यवहार करना भी आवश्यक है अन्यथा साधक अस्त कर्मों के कारण अपयश एवं दुख का भागी होगा। जैसे चारों वेदों का ज्ञाता होने के बाद भी रावण गलत व्यवहार के कारण अंत में दुखी हुआ। दुर्योधन जैसे शक्तिशाली को भी हार एवं अपयश का भागी बनना पड़ा क्योंकि उसका व्यवहार गलत था। व्यवहारिकता में भी देखा गया है कि विद्यार्थी कितनी भी होशियार हो लेकिन सतव्यवहार न करने अर्थात नकल एवं दुर्व्यवहार की सजा में वह पाठशाला से निष्काषित कर दिया जाता है।

इसी प्रकार दसम् गुरु श्री गुरु गोबिन्दसिंह महाराज ने भी सभी को भक्ति के साथ सतव्यवहार पर चलने का उपदेश दिया है जो निम्नलिखित साखियां में वर्णित है-

श्री गुरुजी के पास सुथराशाह नामक सिख रहता था जो प्रतिदिन मिठाई उधार में खाकर पैसे गुरुजी के नाम पर हलवाई को लिखवा देता था। उधारी अधिक होने पर हलवाई ने सुथराशाह से पैसे मांगे परंतु वह मुकर गया कि पैसे काहे के? मैंने तो कुछ भी नहीं खाया। हलवाई ने आकर गुरुजी के पास शिकायत की आपका सिख सुथराशाह कई दिनों से दूध, पेड़े और मिठाईया खा-पीकर जाता है उसके नाम पर बहुत उधार हो गया है परंतु वह अब देने से मुकर रहा है। गुरुजी ने उसे बुलाकर पूछा-क्यों भाई सुथरा ! यह हलवाई क्या कह रहा है? उस समय सुथरे ने 'श्री जपुजी साहिब' की यह पंक्ति पढ़कर सुनाई - 'केते लै ले मुकर पाहि' अर्थात कितने ही ले लेकर देने से मुकर जाते हैं आपकी बाणी में भी तो यही लिखा है। तब गुरुजी ने उससे कहा सुथरा, इसके आगे वाली पंक्ति भी पढ़ो। सुथरा कहने लगा कि मुझे तो यही उचित लगती है, यहां बहुत सारे सिख बैठे हैं अगली पंक्ति वे ही पढ़ लें। तब गुरुजी ने उसे सावधान करते हुए आगे की पंक्ति पढ़कर सुनाई-'केते मूरख खाही खाहि' अर्थात् कितने ही ऐसे मूरख हैं जो उधार लेकर खा जाते हैं एवं वापस नहीं करते। गुरबाणी का अर्थ अपने स्वार्थ की पंक्यिां पढ़कर अर्थ करना नहीं है बल्कि पूरी पंक्तियां पढ़कर करना है। तुमने सिर्फ एक पंक्ति का आधार लेकर अर्थ किया यह सही नहीं है। आगे से ऐसी गलती मत करना।

पराया हक खाने के संबंध में एक और साखी है कि कलगीधर पातशाह श्री गुरु गोबिन्दसिंह जी महाराज अनंदपुर की धरती पर संगत को निहाल कर रहे थे। वर्षा ऋतु में सतलुज नदी पानी से भर गई और चारों तरफ हरियाली ही हरियाली छाई हुई थी। एक रात गुरुजी वहां सैर करने आए जहां उनके दो सिखों के घर थे जिनका नाम लाहोरा सिंघ और माला सिंघ था।

माला सिंघ इज्जतदार, नरम स्वभाव, परोपकारी और धनी था। वह जरुरतमंदों को उधार देकर उनकी समायिक

सहायता करता था और निश्चित की गई शर्त के अनुसार पैसे वापस लेता था। लाहोरा सिंघ ने मालासिंघ से सौ रुपए उधार लिए परंतु वापस देने का नाम नहीं। एक समय मालासिंघ को तंगी आ गई अतः उसने उधार दिए गए पैसे लाहोरा सिंघ से वापस मांगे परंतु पैसे देने से साफ मुकर गया और कहने लगा हम दोनों तो गुरु के सिख है और सिख ने सिख के पैसे खाए तो कोई चिंता नहीं करनी चाहिए। साथ ही कहा कि भाग्य में जैसा लेख लिखा है वैसे ही होता है। तुम्हारे पैसे लेना मेरे भाग्य में लिखा था, क्यों लौटाऊ? मालासिंघ ने कहा पैसे लेकर बातें बना रहे हो, धर्मी इंसान की यह रीति नहीं है कि उधार लेकर मुकर जाए। ऐसा कार्य करने वाले को परमात्मा की दरगाह में अवश्य सजा मिलती है और पछताना पड़ता है। तब लाहोरासिंघ ने कहा –'लेखा कोइ न पुछई जा गुर बखसंदा'। अर्थात जब गुरु क्षमा करें तो आगे हिसाब किताब कोई नहीं पूछता। गुरुजी दोनों की यह सारी वार्ता सुन रहे थे। गुरुजी ने विचार किया कि हमारा सिख लाहोरा सिंघ धन लेकर मुकर रहा है और लोभ वश उसका पूरा दायित्व हमारे ऊपर दे रहा है। जब गुरुजी ने उसे समझाया लाहोरा सिंघ 'शास्त्र यह भी बताते हैं जो जैसा करम करेगा उसे वैसी ही सजा या फल मिलेगा और गुरुजी ने आगे फरमाया गुरबाणी यह भी बताती है –'**हकु पराइआ नानका उस सूअर उसु गाए, गुर पीर हामा ता भरे जा मुरदारु न खाए॥**' (श्री गुरुग्रंथ साहिब अं. 141) अर्थात पराया पैसा एवं अन्य हक खाना हिंदू के लिए गाय और मुसलमान के लिए सूअर खाने के समान है और गुरु/पीर ऐसे सिख का पक्ष ही नहीं लेगें जो झूठ रूपी मांस खाते हैं।

गुरुजी के यह वचन सुनकर लाहोरा सिंघ अपने आप को झूठा जानकर शर्मिंदा हुआ और माला सिंघ को कोमल वचनों द्वारा कहने लगा, कल सवेरे मैं तुम्हारे पैसे लौटा दूंगा। मुझे माफ कर देना। मुझसे बड़ी भूल हो गई। दूसरे दिन सबसे पहले लाहोरा सिंघ ने मालासिंघ को उसके पैसे लौटाए और गुरुजी के पास आकर अपने किए अपराध की क्षमा मांगी। गुरुजी ने मुस्कुराकर उसे उपदेश दिया कि पांचों विकारों के वश में आकर कभी गुनाह नहीं करना और छल कपट छोड़कर परमात्मा का सिमरन करना।

इस प्रकार दसवें गुरु श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी ने उपदेश दिया कि भक्ति के साथ साथ हमेशा अपना व्यवहार साफ सुथरा, छल कपट लोभ से रहित व पराया हक नहीं खाना चाहिए। ऐसे महान सतव्यवहार का उपदेश देने वाले श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी का जन्म पोह माह की सप्तमी संवत 1623 को हुआ। जिसकी इस वर्ष समकक्ष अंग्रेजी तारीख 24 दिसंबर 2009 गुरुवार है। (नानकशाही 5 जनवरी, 2010 मंगलवार) श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी महाराज को उनकी 343 वीं जयंती पर हम सब का शतः शतः नमन !

–**अधि. माधवदास ममतानी**, नागपुर

गोमाता के प्रति हृदय से जुड़ा जाए

वेद भगवान का कहना है कि गाय विश्व की माता है इसलिए जैसा लगाव हमारा अपनी जन्म देने वाली मां के साथ होता है वैसा ही स्नेह, सेवाभाव हमारा गोमाता के प्रति होना चाहिए। ब्रह्मलीन स्वामी श्री रामसुखदास जी महाराज के अनुसार लोगों में गोमाता के प्रति भावना इसलिए भी कम हो रही है क्योंकि गाय के कलेजे, मांस, रक्त के बहुत सी दवाईयां बनती है। इन अंग्रेजी दवाईयों के सेवन से गाय के मांस खून आदि का अंश लोगों के पेट में चला जाता है। जिससे उनकी बुद्धि मलिन हो गई है लोग पाप से पैसा कमाते हैं और उन्हीं पैसों का अन्न खाते हैं। स्वार्थबुद्धि अधिक होने से मनुष्य को अच्छी बातें भी विपरीत दिखने लगती है। गोमात को कष्ट देने से कितने भयंकर नरकों में जाना पड़ेगा, कितनी यातना भोगनी पड़ेगी इस तरह वह देखता ही नहीं।

वामा

● **माता त्रिपता जी :** आप गुरुनानक देव जी की माता जी थी। आपने सदैव गुरुनानक देव जी को सत्य मार्ग पर आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया।

● **बेबे नानकी :** बेबे नानकी जी गुरुनानक देव जी की बहन और ऐतिहासिक दष्टि से प्रथम सिख थीं। उन्होंने गुरुनानक देव जी के आध्यात्मिक संदेशों के प्रचार प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

● **माता खीवी जी :** आप द्वितीय गुरु अंगददेव जी की धर्मपत्नी थी। आपका गुरुजी के जीवन में विशिष्ट स्थान था। 'लंगर' संस्था की रचना में आपका योगदान महत्वपूर्ण है। सामाजिक जागति के लिए आपने बहुत कुछ किया।

● **बीबी भानी जी :** आप तीसरे गुरु अमरदास जी की सुपुत्री एवं चौथे गुरु रामदास जी की धर्मपत्नी थी। आप पांचवे गुरु अर्जुनदेव जी की माता भी थी। सिख इतिहास के प्रारम्भिक निर्माण काल में आपकी सुनेहरी भूमिका है।

● **माता गुजरी जी :** आप नवम् गुरु तेगबहादुर जी की पत्नी और गुरु गोबिन्द सिंह जी की माता जी थी। गुरु तेगबहादुर जी के बलिदान के बाद गुरु गोबिन्द सिंह जी को प्रोत्साहित करने वाले बल के रूप में माता गुजरी जी ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। माता गुजरी जी ने गुरु गोबिन्द सिंह जी के चारों साहिबजादों को प्रशिक्षित किया था। दोनों छोटो साहिबजादों को माता गुजरी जी के साथ गिरफ्तार किया गया। जेहादी सोच से अकेले जूझने वाली माता गुजरी जी भारत की महानतम विभूति है।

● **माता अजीत कौर (माता सुन्दरी जी) :** आप गुरु गोबिन्द सिंह जी की धर्मपत्नी थी। माता अजीत कौर (माता सुन्दरी जी) ने गुरुजी के ज्योति जोत समाने के बाद 40 वर्ष तक खालसा पंथ की पालना की व मार्ग दर्शन किया। आप आध्यात्मिक महिला व विद्वान थी। गुरु रूप में श्री गुरुग्रंथ साहिब जी को संगत के जीवन में उतारने का महत्वपूर्ण कार्य आपके द्वारा हुआ।

● **जरनैल सदाकौर जी :** आपको सेना का पहली महिला कमाण्डर इन चीफ भी कहा जा सकता है। आप विलक्षण प्रतिभा की स्वामिनी थी। आपने अपने दामाद महाराजा रणजीत सिंह जी के साथ अहमदशाह अब्दाली के पुत्र ज़मानशाह को अमतसर के पास हराया और खालसा राज्य की स्थापना की।

● **रानी जिन्दकौर :** आप महाराजा रणजीत सिंह जी की धर्मपत्नी थी। आप युवराज दलीप सिंह जी की माता भी थी। यहीं नहीं, आधुनिक इतिहास में आप पहली महिला स्वतंत्रता सेनानी थी, जिसमें अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष किया।

● **माई भागो :** महिला होते हुए भी, आप गुरुगोबिन्द सिंह जी के पक्ष से युद्ध लड़ीं। आप उस ऐतिहासिक युद्ध में अकेली जीवित बची, जिसमें 'चालीस मुक्ते' शहीद हुए थे। आपकी ताड़ना, उपहास, ललकार के बाद ही महांसिंह के नेतत्व में 'चालीस मुक्ते' युद्ध में लड़े और शहीद हुए।

● **बीबी खेमकौर :** आप सिख सेना की जरनैल थी।1849 में,आपने अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह किया था।

वर्तमान काल

● **स. राजकुमारी अमतकौर :** 1954 में, आप पहली भारतीय महिला थी, जो केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री बनी।

● **स. कमलजीत कौर संधू :** 1970 में, आप पहली भारतीय महिला थी, जो एशियन गेम्स में स्वर्णपदक जीती थी।

● **स. हरिता कौर दिओल :** 1994 में, सोलो फाइट में भाग लेने वाली पहली भारतीय महिला थी।

● **बीबी जागीर कौर :** आप शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की पहली महिला अध्यक्ष बनी।●

जन्मदिन पर विशेष

हिन्दू धर्म रक्षक
श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी महाराज

– **महेन्द्र नागपाल**, फरीदाबाद

विक्रमी संवत 1723 के अन्त में पूर्वी प्रदेश की यात्रा पर निकले गुरु तेगबहादुर जी महाराज अपने परिवार के साथ पाटलीपुत्र पहुंचे। उनकी पत्नी गुजरी जी उस समय गर्भवती थी। सिख संगत की देख रेख में उन्हें वहीं छोड़कर गुरु महाराज ने आगे की यात्रा अकेले ही तय की। यही पाटलीपुत्र (पटना) में विक्रमी संवत् 1723 पौष माह शुक्ल सप्तमी को माता गुजरी जी ने एक सुन्दर तेजस्वी बालक को जन्म दिया। जिसका नाम गोबिन्द राय रखा गया। गौर वर्ण, मनोहर, न्यनाभिराम छवि के गोबिन्दराय में बचपन से ही गजब की नेतृत्व क्षमता थी। वे न केवल हम उम्र साथियों के साथ वीरोचित सैनिक शिक्षा के खेल खेलते, बल्कि उन्हें खिलाते भी थे। सभी बच्चे उन्हें अपना नेता मानने लगे थे। छः वर्ष की अवस्था में वे श्री आनन्दपुर साहिब आ गए। यही उन्होंने अपनी औपचारिक शिक्षा पूर्ण की। अश्वारोहण, शस्त्र विद्या में भी उन्होंने विशेष दक्षता प्राप्त की।

नन्हें कंधों पर बड़ा उत्तरदायित्व-औरंगजेब के शासन काल में हिन्दुओं पर कहर टूट पड़ा था। उन्हें हिन्दु होने का कर चुकाना पड़ता था। हिन्दुओं को जबरन मुसलमान बनाया जाता था। कश्मीर के पीड़ित लुटे-पिटे हिन्दु गुरु तेगबहादुर जी के समक्ष अपने धर्म की रक्षा के लिए उपस्थित हुए। क्योंकि गुरु साहिब सम्पूर्ण हिन्दु, समाज के ही गुरु थे। गुरुजी ने कहा कि इस समय हिन्दु जाति को किसी बड़े बलिदान की आवश्यकता है। नौ वर्षीय बालक गोबिन्द राय ने तपाक से प्रश्न किया, इस समय आपसे भी बड़ा कोई महान सपूत होगा, जिसकी हम बाट जोहे। गुरु तेगबहादुर जी को जैसे दिशा ही मिल गइ्र हो और उन्हें कह दिया कि जाओ औरंगजेब को कह दो कि पहले हमारे गुरु को मुसलमान बनाओ। गुरु तेगबहादुर महाराज को औरंगजेब ने इस मंशा से गिरफ्तार कर मुसलमान बनाने का प्रयास किया। कि यदि वह मुसलमान हो जाएंगे तो उन्हें छोड़ दिया जाएगा। किंतु गुरु महाराज अत्याचारों के विरुद्ध दृढ़ता से डटे रहे और स्वयं को उन्होंने बलिदान कर दिया पर धर्म न छोड़ा। गोबिन्द राय की उम्र उस समय मात्र नौ वर्ष की थी और हिन्दु समाज और सिख पंथ का नेतृत्व उनके नन्हें कंधों पर आ गया और उन्होंने मुगलों के विरुद्ध सशस्त्र संघर्ष का प्रण किया।

खालसा पंथ की स्थापना- बैसाख 1756 विक्रम संवत् की प्रातःकाल गुरु गोबिन्दराय ने एक लौह पात्र में जल तथा पताशे डालकर एवं पांच बाणी का पाठ करके अमृत तैयार किया। एक दिन बलिदानी परीक्षा में सफल उतरें पंच प्यारे शिष्य दयाराम, धर्मदास, मोहकम चन्द, हिम्मतराय और साहिब चन्द को (जो भिन्न-2 प्रान्तों के शिष्य थे) उन्हें अमृतपान कराया और उनका एक खालसा हिन्दु धर्म की रक्षा के लिए बनाकर स्वयं ने भी अमृतपान किया। सतगुरु ने सभी सिखों को सदैव केश, कृपाण, कंघा रखने व कच्छा तथा कड़ा पहनने का आदेश दिया। इसी दिन से सभी शिष्य अपने नाम के आगे सिंह लिखने लगे। इस तरह गोबिन्द राय भी गुरु गोबिन्द सिंह हो गये।

मुगल शासक गुरु जी की शक्ति का लौहा मान चुके थे। गुरु गोबिन्द सिंह के नेतृत्व में उन्होंने अनेक युद्धों में मुंह की खाई थी। एक दिन गुरु गोबिन्द सिंह एक सैनिक तम्बे में विश्राम कर रहे थे। सरहिन्द सूबा के दो पठानों ने उन पर पीछे से छूरे का वार कर दिया। घायल गोबिन्द सिंह ने कुछ समय तक जीवन से संघर्ष किया। अन्तम समय निकट देख उन्होंने एक आयोजन में व्यक्ति गुरु की परम्परा को समाप्त करके श्री गुरुग्रंथ साहिब को ही गुरु मानने का आदेश दिया। विक्रमी संवत् 1765 कार्तिक सुदी पंचमी को गुरु गोबिन्द सिंह जी परम ज्योति में विलीन हो गये। इस प्रकार वे परकीय आक्रांताओं से निरन्तर संघर्ष करते रहे तथा हिन्दु समाज की रक्षा के लिए तीन पीढ़ियों का सम्पूर्ण बलिदान कर दिया। उन्होंने अपने जीवन से यह चरितार्थ कर दिया-

चिड़ियों से मैं बाज तड़ाऊँ, सवा लाख से एक लड़ाऊं।
तबै गोबिन्द सिंह नाम कहाऊं।

प्रत्येक हिन्दु के लिये वे आदर्श एवं अनुकरणीय महापुरुष है।●

राष्ट्रगीत और राष्ट्रभाषा का अपमान देशद्रोह

– श्री अशोक जी सिंहल

प्रयागराज, इधर कुछ दिनों के अन्तराल में ऐसी कुछ घटनाएं घटी है जिसके प्रति देश के लोगों को सावधान होना अत्यंत आवश्यक है। पहली घटना राष्ट्रगीत 'वन्देमातरम्' के विरुद्ध जमियत-ए-उलेमाए हिन्द द्वारा देवबंद में पारित प्रस्ताव की है। इस देश के स्वातंत्र्य आन्दोलन में वन्दे मातरम् एक मंत्र के समान था। इस मंत्र को गाते हुए हमारे हजारों बंधु फांसी के फन्दे पर चढ़ गए। हम इस मंत्र के अपमान को कैसे सहन कर सकते हैं? लेकिन इस देश के गृहमंत्री ऐसे देशद्रोही लोगों को दण्डित करने के स्थान पर उन्हें महिमा मण्डित करने के लिए दूसरे दिन उसी मंच पर पहुँच जाते हैं जिस मंच से यह प्रस्ताव पारित किया गया था। यह वीरगति प्राप्त स्वतंत्रता सेनानियों के साथ-साथ भारत की सम्पूर्ण देशभक्त जनता को मर्माहम करने वाला कुकृत्य है। देश की जनता इसे कभी सहन नहीं करेगी। देश के लोगों को ऐसा गृहमंत्री नहीं चाहिए।

दूसरी घटना भाषा को लेकर महाराष्ट्र में किए जा रहे घृणित कृत्य है। भाषा के नाम पर देश के लोगों को विखण्डित करने का प्रयास करने वाले ऐसे लोगों की जितनी भी निन्दा की जाए वह कम है। उन लोगों को यह भली प्रकार समझ लेना चाहिए कि हमारी सांस्कृतिक जड़े इतनी गहरी है कि उनके द्वारा किए जा रहे प्रयासों का देश की एकता और अखण्डता पर कोई भी प्रभाव नहीं पड़ेगा। राष्ट्रभाषा का अपमान एक खुला देशद्रोह है। ऐसे देशद्रोहियों को कठोर से कठोर दण्ड दिया जाना चाहिए।

तीसरी घटना चीन द्वारा भारत पर किए जा रहे परोक्ष आक्रमण की है। चीन ब्रह्मदेश के रास्ते भारत के माओवादियों के लिए बहुत बड़ी मात्रा में अस्त्र-शस्त्र भेज रहा है। हमारी सरकार को चीन के इशारे पर हिंसा का ताण्डव रचने वाले इन राष्ट्रद्रोही तत्वों के विरुद्ध थल एवं वायु सेना के प्रयोग से नहीं हिचकना चाहिए। पूर्व रक्षा मंत्री श्री जार्ज फर्नांडिस ने बहुत वर्षों पूर्व ही चीन को शत्रु नम्बर एक होने की बात कही थी। चीन ने आज से पचास वर्ष पूर्व एक स्वतंत्र देश तिब्बत पर जबरन कब्जा कर लिया और आज दलाईलामा के अरुणाचल प्रदेश यात्रा का विरोध कर रहा है। भारत के आन्तरिक मामले में किया जा रहा उसका यह हस्तक्षेप कदापि सहन करने योग्य नहीं है। भारत सरकार को स्पष्ट शब्दों में उससे तिब्बत को मुक्त करने की बात कहनी चाहिए। चीन से भारी मात्रा में उपभोग की वस्तुएं चोरी-छिपे भारत लाई जा रही है जिसका दुष्प्रभाव हमारी अर्थ व्यवस्था पर पड़ रहा है। देशवासियों से हमारा अनुरोध है कि वे चीनी वस्तुओं का खरीदना एवं उपयोग करना छोड़ दें।●

Cow related Researches

- Bakshi Amandip Singh 'Ashwini'

1. Cows Urine as an Antimicrobial Agent :

Kumari Namrata Y. Mahurker

Dessertation for MSc Microbiology 2006, Shri Shivaji Education Society / Amravti's Science College, Nagpur

- Gram Negative, Gram Positive bacteria, Fungi were significantly inhibited by concentrated cows urine.

Some of the constituents of urine which is related for microbicidal properties

Halogenated Phenol - Antifungal.

2 Phenyl Phenol - Antimicrobial, Antiviral

Carbolic acid, Manganese - Antibacterial, Pesticidal

Aurum Oxide - Antimicrobial, Antitoxic.

2. Antigenotoxic| Ameliorative effect of Ark in human polymorphonuclear leukocytes :

Dr. Datta, S. Saravana Devi, K. Krishnamurthi, T.Chakravarthi.

National Environmental Engineering Research Institute, Nagpur.

The Ark and Redistilled ark is found to possess total antioxidant status of around 2.6mmol contributed mainly by volatile fatty acids (1500mg|litre). These fatty acids and other antioxidants might be responsible for the observed ameliorative effect. The chromosomal aberration caused by chemicals could be ameliorated by redistilled Ark (1,50,100ul) Antioxidant status in distillates-0.8mmol.Redistillate-2.6mmol. (ammonicalnitrogen- 15mg|litre).

3. Effect of Cow Urine on Wounds :

A.K. Maheshwari, A.K.Gupta, AK Das, College of Veterinary and Animal Sciences, G.B.Pant University of Agriculture and Technology, Pantnagar. 263145.

Cow Urine is having antiseptic properties. The urine implicated Wounds were found less infected and healing time is also less when compared to antiseptic cream. Administration of fresh urine orally has added effect on wound healing due to immunological properties.

4. Effect of cows urine on health :

Dr. Amita Gupta, College of Veterinary Science & Animal Husbandary, Mathura

Paper presented for MVSc in 2003.

5. Effect of Malanad Gidda Cows Urine :

BSc – Microbiology – Project Report 2005-2006, SRN Shetty memorial College,. Shimoga

Malanad Gidda cows urine is having antifungal activity. The metabolites of fungus during this process, is antimicrobial also. That is to say urine exerts direct action on fungus and indirectly on bacteria's also.

6. Effect of Arka in various diseases :

Chandrashekhar Kundle, Bharat chauragade, Ajith Rawal, Nagpur

Paper presented in World Ayurveda Congress-2002.

Physical and Chemical composition of Urine and Arka and its effects on human beings is detailed.

7. Prevention of Pathogenic Free Radicals through Cow Urine :

A.K. Singh, P.K. Singh, L.K. Singhal, D.K.Agarwal, College of Veterinary and Animal Science, Pantnagar, IVRI Izatnagar

Free radicals are molecules, which have lost electron. These free radicals attack the nearest stable molecule and steal the electron. This is a chain reaction of destruction. They can attack enzymes, fat, proteins, etc and causes DNA to mutate.

The Oxygen Free radicals (Reactive oxygen species) are produced due to – Phagocytes, Mitochondria function, Inflammation, Heavy Exercise,Cigarettes,Smoking,Pollution, adiation, Chemicals, Drugs, Altered Ozone level, Moulds, Burned Meat.

They cause mutation of cells. This in turn may predispose for – Parkinson's Disease, Alzhimor's Disease, Cancer, Sclerosis, Stroke, Stress, Fibrosis, Cataract, Macular Degeneration, Aging

Cows' urine prevents the free radicals formation.

8. Study of skin of Indigenous cows , Cross Bred cows and Exotic cows :

Dr. Govindayya, Dean, Veterinary college, Shimoga.

MVSc theses – 1974

The Sebaceous glands of Desi cows are bigger in size, shape and are in larger number. So that they produce more sebum.

9. Effect of Arka on chromosomal aberration :

Dipanwita Datta Submitted for MSC in Environment Science, Indira Gandhi Academy of Environmental Education Research, Jiwji university, Gwaliar (UP).

The Arka could protect mitomyncin C induced chromosomal aberration . The Arka has Volatile acids about 39mg/ltrs. These Volatile Acids are Antioxidants, which show the ameliorating effect on DNA and protect DNA damage.

10. Stage IV Oropharyngeal Carcinoma undergoes complete Regression due to cow urine theropy :

Dr. Satyashanker Varamudi, Kasaragod.

11. Anti Cancer properties of cow Urine :

K Darma, R.S. Chauhan L. Singhal, IVRI, Izatnagar

The cow Urine Therapy is suggested to poses potent Anti Cancer abilities. The following properties are in listed as responsible for Anti Cancer Results.

DNA repairing potential :

Cow urine efficiently repairs the damaged DNA. Damage of DNA by chemicals is the major cause for Cancer. This property reduces the spread of malignant cancers and helps fighting tumor.

Apoptosis inhibition :

Lymphocytes under go suicidal tendency due to chemicals. Lymphocytes are major cells, which fights against cancer cells. Cow urine reduces an apoptosis of Lymphocytes.

Antioxidant Property :

The volatile fatty acids show antioxidant properties which controls damage in DNA.

Antimicrobial Activity :

Many viruses are causing cancer. These microbes are killed by cow urine.

Bioenhancing Property :

Bioenhancing are substances which promote and augment the bioactivity or bioavailabilty or uptake of drugs. This will reduce the dosage & duration of antibiotic therepy and anticancer drugs like Taxol.Taxol is used in MCF-7 (breast cancer cells).

Anti free radicals :

The free radicals cause cell damage thereby inducing tumour cell growth or causes aging. Cows' urine prevents free radicals.

Immounomodulating activity :

Cow Urine has vital potential to enhance the activity of macrophages. Lymphocytes (both T & B cells) humoral cellular immunity, cytokines (Interlukine 1 & 2).

12. Increase of Immunity through Cows Urine (various Parameters) :

- B cell blastogenesis – 59.50%
- T cell blastogenesis – 64.00%
- Serum IgG level – 19.80%
- Serum IgM level – 19.00%
- Serum IgA level – 0.53%
- Macrophage function – 104.00%
- DTH reaction – 126.00%
- Interlukin 1 level – 30.90%
- Interlukin 2 level – 11.00%

On the basis of chemical fingerprinting of Urine of different animals like Indigenous, cross bred, exotic, buffaloe, it is shown that Indigenous cow's urine is highly effective whereas it is almost nil in cross bred, exotic cows and buffaloes. The special constituent in Desicow's urine is 'Rasayan

tatwa' which is responsible for immune system and bioenhancer property.

13. Method of distinguishing Human & Bovine Milk samples based on soluble Phosphate content :

Sangeeta Mehta, C.S.Nautiyal

Sahiwal cows milk is closer to human mother's milk because of its significantly lower soluble phosphate level when compared to H.F or Buffaloe.

14. Evaluation of Sedative and anticonvulsant activity of Unmadanashak Ghrita :

Girish S. Achilya, Sudhir Wadekar, A.K. Dorle, Nagpur University. Nagpur.

Paper presented in 9/10/2003.

Unmadanashak Ghrita is a Ayurvedic formulation containing Ferula Narthex, Gardenia Gummifera, Ellataria cardamom, Bacopa monneri, Cowsghee(76%) Unmadanashak Ghrita has CNS depressant and anticonvulsant activity.

15. Effect of cow urine fertilizer on quality of Pasture :

Aoyagi Noojiro et- at Gumma Ken Nogyo, Skikenjo Hokokku 1974.

The application of Urine resulted in a marked increase of grass growth and this did not effect soil quality.

16. The Urine of Sacred cows :

G. Paul Moore, 7.2.2006. Suny Upstate Medical University.Otolaryngology & Communication Science, Syracuse, New York.

I recall doing research about 25years ago. When I came across a recipe for a potion that had reportedly been used in India many years before for the treatment of Laryngitis. Among other ingredients it contained the urine of sacred cows. This seems to be quite potent ingredient that, to this day, is used for medicinal purposes in the treatment of anything from stomach ailment to cancer. It can be mixed with herbs or taken straight. And I also learned that it is imported from India for use as a biopesticide. A good friend of mine said, " Everything old is new again".

17. Bioactivities of Cow Urine and Arka in agriculture :

Central Institute of Medical & Aromatic Plants, Lucknow – 226015

Addition of cow's urine in composting pits led to production of superior quality vermicompost with higher concentrations of major macro and micro nutrients. Such Vermicompost was found to be superior in terms of useful microflora(fungi, bacteria, actionmyces).

18. Development of Cow Urine based disinfectant – 13.11.2005 :

S.A.Mandavgane, A.K.Rambhal, N.K.Mude, Priyadrshini Institute of Engineering Technology, Nagpur-440019.

Herbal disinfectant :

Cow urine	-	25ml
Neem extract	-	37.5ml
Tulsi extract	-	37.5ml
Ritha extract	-	20ml
Pine oil	-	10ml

This product is added to 1 liter of water. This can be used on any surface like walls, floors, tiles, bathrooms, and toilets. The cow urine has natural disinfectant and antiseptic qualities. The main constituent of cow urine that shows disinfectant activity is carbolic acid, which is a mixture of Phenol and Cresol.

19. Cow Urine has Anti Leishmania effect :

Sarman Singh, All India Institure of Medical Sciences- New Delhi.

Leishmaniasis (Kala azar) is a highly endemic disease in Indian Sub continent. The cow urine shows strong growth inhibitory action where as human urine found growth stimulator.

20. Comparision of Mineral Profile in Urine of Cross breed, Sahiwal and Non-descript cow :

GS Parihar, MKS Rajput, AK Upadhyay, M.Kumar, College of Veterinary Animal Science, Pantnagar.

Concentration of some mineral like Zinc, Iron, Magnesium, Potassium, Calcium were compared in the urine. Non descript cows showed maximum

concentration of Zinc, Potassium, Calcium ,but Iron is lowest. Cross-breed cattle's showed minimum concentration of Zinc, Potassium, Calcium, but Iron is highest. Sahiwal cows showed average concentrations.

This is to say that the concentration of minerals in urine of different breeds differs.

21. Effect of Panchagavya on E. coli in procured Milk :

A.Subramaniam, MD – CDCMPU. Pachapalayan, Coimbatore.

Panchagavya - Urine, Dung, Milk, Curds, Ghee and Sugarcane juice, Tender coconut water and Bananas mixed and kept for 21days.The result throws more light on the mechanic of selective destruction of E.coli in procured milk.

22. Conjugated Lineolic acid – anti a cancer compound in milk :

Dale Bauman, Professor of Animal Science, Cornell Reasearch Farm Dryden.

Conjugated Lineolic acid suppresses carcinogens and inhibits colon| prostate | ovary | breast cancers and leukemia. CLA even in extremely low concentrations (0.05/=) in milk inhibits carcinogens.

23. Effect of Cow Urine on Biochemical Parameters of white leghorn layers :

Nidhi Garg, Ashok Kumar, R.S.Chauhan, College of Veterinary & Animal Sciences. Pantnagar, IVRI, Izatnagar.

Cow Urine was given to the treated group at 1ml per bird :

Serum Protein -14.71% increase
Serum Glucose - 37.81% increase
Serum Calcium - 28.85% increase
Serum cholesterol - 30.26% increase

24. Effect of cow urine an Lymphocyte Proliferation in developing stages of chicks:

P.Kumar, G.K. Singh, R.S.Chauhan, P.P.Singh, College of Veterinary and Animal Sceince. Pantnagar, IVRI Izatnagar.

Distilled cow urine at 10ml|litre of drinking water was given to the chicks from age 0 to 28 days. T-cell and B-cell blastogenesis assay was performed. Lymphocyte proliferation assay shows that there is T and B cells become functional with increasing efficacy from day of hatch.

25. Effect of cow Urine on the Production & quality Traits of Eggs :

Nidhi Garg, A.Kumar, R.S. Chauhan, L.K. Signhal, M. Lohani, IVRI, Izatnagar.

There is significant increase in egg production egg weight, shape index, albumin length, albumin index, yolk index, and shell thickness, shell weight. This can be used as feed additive to get good quality eggs.

26. Cow's urine concoction :

A Traditional Herbal preparation commonly administered to convulsing children in Yoruba speaking people of Nigeria.

Paper presented in University of Ife, Nigeria.

27. A study of the effect of Ashtamangal Ghrit on Intelligence :

C.V. Gore, A.K. Dorle, Department of Psychology. Nagpur Univercity. Govigyan Anusandham Kendra Nagpur.

4 gms of Ashtamangal Ghrit was given every day for 4 months to the students. Academic performance and Intelligence test was performed. The result showed favorable effect on the intelligence of students.

28. Agnihotra – effect on air borne microorganisms :

Archana, Divya, Shalini,Suma, BSc Microbiology – Project Report, SRN Shetty Memorial College, Shimoga

The use of cowdung cake and cows pure ghee releases Formaldehyde, Ethylene oxide, Propylene Oxide, B-propiolactone, acetylene. These gases are ecofriendly and they purifies air.

There was 100% reduction in fungal count and 94% reduction in bacterial count. The Agnihotra ash can be used it seed treatment, soil treatment and human medicines also.●

ब्राह्मण कैली घातु कंञका अणचारी का धानु॥ फिटक फिटका कोडु बदीआ सदा सदा अभिमानु॥

-श्री गुरु अमरदास जी महाराज

गुरमत, कृषक और गौवंश संरक्षण

- स. कुलवंत सिंह सचदेवा

ekuuh; lnL; jkT; vYil[;d vk;kx ,o vè;{k&jk"Vh; fl[k lxr] eè; in'k dh ikl okrk

भोपाल। अपराह्न 3 बजे स. कुलवंत सिंह सचदेवा, माननीय सदस्य अल्पसंख्यक आयोग (म.प्र.) की प्रैस वार्ता थी। इससे पूर्व, राज्य अल्पसंख्यक आयोग ने एक ऐतिहासिक फैसला लिया था, जिसके तहत गौवंश हत्या पर पूर्ण प्रतिबंध की बात कही गई थी। यह प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किया गया था। प्रस्ताव की रचना में राष्ट्रीय सिख संगत के प्रमुख कार्यकर्ता के नाते स. कुलवंत सिंह सचदेवा ने अहम् भूमिका अदा की थी। भारतीय मूल के बौद्ध, जैन, पारसी, सिख आदि अल्पसंख्यक आयोग में अपना पक्ष राष्ट्रीय हितों को देखकर रखें, यह आवश्यक हो गया है।

भोपाल के मीडिया कर्मियों के समक्ष यह विषय कौतुहल व जिज्ञासा का हो गया था कि गुरु परम्परा में गौवंश के संदर्भ में क्या मान्यताएं हैं? सिख काश्तकारों के जीवन में गौवंश का क्या महत्व है? इन सभी प्रश्नों का उत्तर देने के लिए ही स. कुलवंत सिंह सचदेवा ने प्रैसवार्ता का आयोजन किया था। अगले दिन लगभग सभी समाचार पत्रों में इस विषय का विस्तृत उल्लेख भी किया गया था। इस प्रकार गौवंश संरक्षण का विषय जोरदार तरीके से रखा गया। प्रैसवार्ता के दौरान अग्रिम विलेख पत्रकार बंधुओं में वितरित किया गया। जोकि इस प्रकार है-

भारत एक कृषि प्रधान देश है और सिख संगत कृषक बाहुल सामाजिक संरचना है। यह स्वभाविक ही है कि सिख मन में गौवंश के लिए विशेष प्रेम है। ऐसा ही नहीं, पंचम् गुरु अर्जुनदेव जी महाराज ने श्री गुरुग्रंथ साहिब जी के अंग 669-670 पर धनासरी राग में ईश्वर या अकालपुरख की स्तुति में जो शबद् अंकित किया है, उसमें रूपक के रूप में गौवंश में श्रेष्ठ कामधेनु का उल्लेख किया गया है-

इच्छा पुरकु सरब सुखदाता हरि,
जा कै वसि है कामधेना॥

दसम् गुरु गोबिन्द सिंह जी महाराज जी की वाणी 'उग्रदन्ती' में गौवंश हत्या को समाप्त करने की बात बड़ी प्रमुखता से हमारे सामने आई है-

यही देह आगिआ तुरकन गहि थपाऊं॥
गऊ घात का दोख जग सिऊं मिटाऊं॥

प्रथम गुरु नानकदेव जी महाराज अपने जीवन के प्रारम्भिक कार्यकाल में गाय चराते हैं, व जीवन के अन्तिम चरण में करतारपुर में खेती करते हैं। गाय-बैल के साथ बाबा नानक जग को दसों नखन की किरत कमाई या कर्म का ज्ञान देते हैं। सिख परम्परा के अनुसार अरदास के लिए तैयार किए गए कड़ाह-प्रसाद में एक भाग आटा, एक भाग शुद्ध देशी घी (गौघृत) और एक भाग चीनी या शक्कर का होना सिद्ध करता है कि गुरु जीवन दर्शन में गौवंश का कितना महत्व है। गुरु परम्परा में गौवंश के प्रति आगाध श्रद्धा ही थी, जिसके कारण मुगलों व गुरु गोबिन्द सिंह जी के मध्य श्री आनन्दपुर साहिब के युद्ध के समय गाय का प्रतिरूप बनाकर कसम उठाने वाला प्रकरण हुआ। ये सभी बिन्दु सिद्ध करते हैं कि गुरु जीवन दर्शन में गौवंश संरक्षण प्रमुख मानवीय कर्म है। इसीलिए सिख संगत गौवंश हत्या का सदैव विरोध करता है। गौवंश हत्या कृषि प्रधान भारत को हानि पहुंचाने का एक माध्यम है। सिख मानते हैं कि गौवंश का संरक्षण जरूरी है। सिख समाज गौवंश संरक्षण को अपना मौलिक अधिकार मानते हैं। ●

गाय : एक अंतरंग परिचय

हममें से जो गावों में पले-बढ़े हैं, उनके लिए गाय का उल्लेख यादें ताजा कर देती है। हमारी पौ फटती थी घर के निकट के गाय के छप्पर से माताओं के लिए गाय दोहन एक प्रात: कालीन प्रिय कार्य था। एक चमकतें बर्तन के साथ गो छप्पर में जाकर माताएं गाय को उसके प्रिय नाम से पुकारते हुए प्यार से थपथपातीं। गाय जितना दूध परिवार के लिये छोड़ती, पूरे परिवार, विशेषकर बच्चों के भरपूर पोषण के लिये पर्याप्त रहता, जेसे कि गाय अपने बछड़े को पोषती हो।

गाय एक गतिमान मंदिर है। तैंतीसस करोड़ हिंदू देवी-देवताओं के समूह का निवास। गाय जो एक चलता फिरता अस्पताल है, ने अमूल्य औषधि के रूप में पंचगव्य दिया है। गाय विश्व की माता है (गावों विश्वस्य मातर:)। वह कृषि, यातायात, खाद्य, औषधि, उद्योग, खेलकूद, धार्मिक अनुष्ठानों, अर्थव्यवस्था और हमारी भावनात्मक स्थिरता में सहायक है। अति प्राचीन काल से गाय का भारतीय समाज में एक विशिष्ट स्थान है।

गाय की विशेषताएं -

● भारतीय गायें बास इंडिकस प्रजाति की हैं।

● ऊंचे स्कंध, झूलता गलावलंब और पीठ पर सूर्यकेतु स्नायु इस नसल की पहचान है।

● ऐसा माना जाता है कि सूर्यकेतु स्नायु वातावरण से औषधीय तत्व प्राप्त करता है। जिससे गोबर, गोमूत्र और गौ-दुग्ध अधिक पोषक बनते हैं।

त्वचा -

● गर्दन के नीचे झूलते गलावलंब और लंबे कानों के कारण त्वचा का पसीजता क्षेत्र बढ़ जाता है। फलत: शरीर ठंडा रहता है। जो हमारी जलवायु के लिए उपयुक्त है।

● सीने की ग्रंथियां चौड़ी और पसीना सुगंधित होने के कारण मानसूनी कीटों से बचाव होता है।

● गाय अपनी पेशियों के त्वरित संचालन से कीटों को भगा देती है।

● छोटे बालों के कारण त्वचा स्वच्छ रहती है।

● इन सब अनोखे गुण की बदौलत भारतीय बैल धूप और बरसात दोनों में सुचारु रूप से कार्य करसकते हैं।

पूंछ- ● जमीन को छूती हुई।

● पूंछ का जोड़ अनोखा है और यह गर्दन तक लिपट सकता है।

● मक्खियों और कीटों को भगाती है।

खुर - ● जुड़े हुए होने के कारण टहनियां और धूल नहीं चिपकते।

● भारतीय बैल का खुर छोटा और मजबूत होता है। जिससे जुताई और गाड़ी खींचना सहज हो जाता है।

● कई भारतीय बैल घोड़े के सूमो के बिना काम कर पाते हैं।

● ट्रैक्टर के विपरीत बैल, भूमि सतह को कठोर नहीं करता और न ही सहायक कीटों को मारता है।

गुणसूत्र (क्रोमोसोम) -

● शरीर के विभिन्न गुण धर्म और कार्यकलाप इनसे नियंत्रित होते हैं।

● गाय बैलों के शरीर में पर्याप्त 'वै' गुणसूत्र होने के कारण वह पीढ़ियों तक वंध्या नहीं होती।

जीवन वैशिष्ट्य -

● बेस मेटाबोलिक दर नाम है शरीर द्वारा विश्रामावस्था में श्वास एवं तापमान बनाये रखने जैसी आवश्यक प्रक्रियाओं के संचालन में खर्च की जाने वाली ऊर्जा का।

● भारतीय गायों में यह दर कम होता है। अत: सूखा पड़ने पर यह थोड़े भोजन से निर्वाह कर लेती हैं। फलत: दुर्बल होने पर भी यह पोषण पाकर पुन: शीघ्र शक्तिशाली बन जाती हैं। ऐसी अस्थायी मुश्किलों के बाद के समय मे इसकी दूध उत्पादन या प्रजनन क्षमता प्रभावित नहीं होती।

रोग प्रतिरोधक क्षमता -

● गायों में जन्मजात रोग प्रतिरोधक क्षमता होती है। इसमें चरागाहों में चरने वाली या छप्पर तले रहने वाली गायों में कोई अंतर नहीं होता।

● इससे उन पर होने वाला चिकित्या व्यय कम होता है।

● इसी कारण अमेरिका और यूरोप, भारतीय गायों का आयात कर उनसे संकर प्रजनन के माध्यम से अपनी

स्थानय प्रजातियों की रोग प्रतिरोध क्षमता में सुधार करते हैं।

पंचगव्य-

● यह दूध, दही, घी, गोमूत्र एवं गोबर का सामूहिक नाम है।

● इनका उपयोग आहार, औषधि, खाद एवं कीटनियंत्रक के रूप में होता है।

● यह रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाते हैं।

● बिना किन्हीं दुष्प्रभावों के ये कैंसर, तनाव, उच्चररक्तचाप, चर्म रोग और मूत्र संबंधित रोगों से लड़ते हैं।

गाय का छठा ज्ञान

गाय का छठा ज्ञान तीव्र होता है। पौराणिक कथाओं में तो गाय के बोलने का उल्लेख है। वह किसी आसन्न दुर्घअना की चेतावनी अपने स्वामी को देकर उसके बचने में सहायक होती है। तब विधाता ने गाय को मूक कर दिया ताकि विधि के विधान में परिवर्तन ना हो।

गाय के सुख दुख में प्रभावित होती है। गायों के आसूं बहाने तथा अपने स्वामी से सहानुभूति में आहार न करने के अनेकों उदाहरण है।

संकट का पूर्व ज्ञान :

● महाराष्ट्र के लातूर में 30 सितंबर 1993 के दिन एक विनाशकारी भूकंप आया। उस स्थान पर रहने वाली देवानी गायें उसके कुछ दिन पहले लोगों को चेतावनी के रूप में विचित्र व्यवहार करने लगीं, जैसे रोना, कूदना। उस चेतावनी को हम समझ नहीं पाए।

● 2004 की त्सुनामी के पहले भी ऐसी घटनाएं घटी। तब बरगूर, अंब्लाचेरी और कंगायम प्रजाति की गायों ने भी ऐसा ही विचित्र व्यवहार किया। हम पुनः उस संदेश को समझ नहीं पायें।

पर्यावरण और गाय

कृषि, खाद्य, औषधि और उद्योगों का हिस्सा के कारण पर्यावरण की बेहतरी में गाय का बड़ा योगदान है।

● प्राचीन ग्रंथ बताते है कि गाय की पीठ पर के सूर्यकेतु स्नायु हानिकारक विकीरण को रोख कर वातावरण को स्वच्छ बनाते हैं। गाय की उपस्थिति मात्र पर्यावरण के लिए एक महत्वपूर्ण योगदान है।

● भारत में करीब 30 करोड़ मवेशी है। बायो गैस के उत्पादन में उनके गोबर का प्रयोग कर हम 6 करोड़ टन ईंधन योग्य लकड़ी प्रतिवर्ष बचा सकते हैं। इससे वनक्षय कुछ हद तक रुकेगा।

● गोबर का पर्यावरण की रक्षा में महत्वपूर्ण भाग है।

● गोबर के जलन से वातावरण का तापमान संतुलित होता और वायु के कीटाणुओं का नाश।

● गोबर में विष, विकिरण और उष्मा के प्रतिरोध की क्षमता होती है। जब हम दीवारों पर गोबर पोतते हैं और फर्श को गोबर से साफ करते हैं तो रहने वालों की रक्षा होती है। 1984 में भोपाल गैस लीक से 20,000 से अधिक मरे। गोबर पुती दीवारों वाले घरों में रहने वालों में असर नहीं हुआ। रूस और भारत के आणविक शक्ति केंद्रों में विकिरण के बचाव हेतु आज भी गोबर प्रयुक्त होता है।

● गोबर से अफ्रीकी मरुभूमि को उपजाऊ बनाया गया।

● गोबर के प्रयोग द्वारा हम पानी में तेजाब की मात्रा घटा सकते हैं।

● जब जम संस्कार कर्मों में घी का प्रयोग करते हैं तो ओजोन की परन मजबूत होती है और पृथ्वी हानिकारक सौर विकिरण से बचती है।

● बढ़ते हुए कल्लगाहों और भूकंपों के बीच का संबंध प्रमाणित होता जा रहा है।

श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी महाराज

तिलक जंजू राखा प्रभु ताका।
कीनो बड़ो कलू महि साका॥

साधनि हेति इति जिनि करी।
सीसु दीया परु सी न उचरी॥

तेग बहादुर के चलत भयो जगत को सोक॥
है है है सभ जग भयो जै जै जै सुरलोक॥

स्वास्थ्य दर्पण

-**सरदारनी सुखप्रीत कौर**, भोपाल

अमरूद खायें-खांसी मिटायें

सर्दी के मौसम में खांसी-जुकाम का प्रकोप अधिक रहता है। खांसी होने पर कुछ फलों-वनस्पतियों का उपयोग भी लाभदायक रहता है। इनके बारे में यहां कुछ जानकारी दी जा रही है। आप भी इन्हें उपयोग कर खांसी से छुटकारा पा सकते हैं।

- यदि सूखी खांसी हो और कफ नहीं निकलता हो तो सुबह-सुबह एक ताजा अमरूद चाकू से काटे बिना ही चबाकर खायें। इससे दो-तीन दिन में ही खांसी ठीक हो जाती हैं।

- यदि बलगम खूब पड़ता हो और खांसी अधिक हो, दस्त साफ नहीं होता हो और हल्का बुखार भी हो तो अपनी इच्छानुसार ताजे-मीठे-अच्छे अमरूद खायें, लाभ होगा।

- जुकाम की साधारण खांसी में अधपके अमरूद को आग में भूनकर उसमें नमक लगाकर खाने से लाभ होता है।

खांसी मिटाने हेतु अन्य उपाय

अनार के छिलके को मुंह में रखकर चूसने से खांसी में लाभ होता है।

40 ग्राम अनार का छिलका, 6-6 ग्राम पीपली व जवाखार तथा 10 ग्राम कालीमिर्च के बारीक चूर्ण को गूड़ की चाशनी में मिलाकर आधा-आधा ग्राम की गोलियां बनाकर रख लकें। 2-2 गोली दिन में तीन बार गर्म जल से लेने पर खांसी में लाभ होता है।

100 ग्राम अनारदाना एवं सौंठ, कालीमिर्च, पीपली, दालचीनी, तेजपात, इलायची सभी की 50-50 ग्राम मात्रा लेकर चूण बना लें। इस मिश्रण में समान भाग खांड मिला लें। इस चूर्ण की 2-3 ग्राम मात्रा दिन में दो बार शहद के साथ लेने से कुछ ही दिनों में कास, श्वास, पीनस आदि ठीक हो जाते हैं। यह उत्तम पाचक, दीपक एवं रोचक है।

किशमिश, आंवला, खजूर, पीपली तथा कालीमिर्च सभी समान मात्रा में लेकर पीस लें। इस चटनी का सेवन सूखी खांसी और कुकुर खांसी में लाभदायक है।

ग्वारपाठे का गुदा और सेंधा नमक दोनों की भस्म बनाकर 12 ग्राम की मात्रा में मुनक्का के साथ सुबह-शाम लेने से कास (खांसी) और कुफज श्वास ठीक होते हैं।

मुलेठी का टुकड़ा मुंह में रखकर चूसने से खांसी में आराम मिलता है।

बागवानी में जैविक खेती का महत्व

1. जैविक खेती पद्धति से फूलों की सुगंध में ओर सब्जियों एवं फलों की गुणवत्ता में बढ़ोतरी होती है।
2. जैविक खेती पद्धति के लिए खाद कचरे से बनाई जाती है, इस तरह कम लागत में उच्च कोटि के फल, सब्जियां प्राप्त किए जा सकते हैं।
3. जैविक खाद विशेष रूप से वर्मी कम्पोस्ट (केंचुआ खाद) एवं वर्मीवाश के उपयोग से निष्फल वृक्षों में फल आना प्रारम्भ हो जाता है।
4. जैविक खेती पद्धति से प्राप्त उत्पाद स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद तथा स्वाद में भी श्रेष्ठ होता है।
5. जैविक खेती के उत्पाद जल्दी खराब नहीं होते।
6. जैविक खेती पद्धति से भूमि का स्तर कभी घटता नहीं, परिणामस्वरूप प्रति वर्ष उत्पाद में कमी नहीं आती। वातावरण भी प्रदूषण रहित होता है।

सिंहनाद

राष्ट्रीय सिख संगत का दो दिवसीय अधिवेशन सम्पन्न

हरिद्वार-निष्काम सेवा ट्रस्ट (अग्रवाल सेवा सदन) में चल रहे राष्ट्रीय सिख संगत की शिरोमणि समिति की दो दिवसीय केन्द्रीय कार्यकारिणी का समारोप हो गया। बैठक में विभिन्न निर्णयों के साथ पुरानी कार्यकारिणी को एक और विस्तार दिया गया तथा अगामी महाकुंभ मेला के दौरान 15 सेवा प्रकल्प चलाने का निर्णय लिया गया। बैठक में राष्ट्रीय सिख संगत ने पूर्व कार्यकारिणी के कार्यों को देखते हुए इसे अगले दो साल के लिए और मौका दे दिया गया। इसके तहत स. गुरचरन सिंह गिल (जयपुर) को पुनः राष्ट्रीय अध्यक्ष की कमान सौंपी गई। इसके साथ ही चार सदस्यों का कार्यकाल पूरा होने और दो सदस्यों की मृत्यु होने के कारण दो नए सदस्यों की नियुक्ति की गई।

राष्ट्रीय अध्यक्ष ने बताया कि सिख संगत की बैठक में तय हुआ है कि कुंभ मेले के दौरान सिख परम्परा के अनुसार लंगर माता गंगाजी, भाई कन्हैया जी के नाम से मुफ्त मेडीकल कैंप, सिखों की बलिदानी परम्परा को याद कराने के लिए एक भव्य प्रदर्शनी, जरूरमंदों के लिए निवास व्यवस्था, सर्वधर्म संत सम्मेलन, राष्ट्र रक्षा सम्मेलन और कीर्तन दरबार सहित संगत के कार्यों के प्रचार जैसे 15 सेवा प्रकल्प चलाए जाएंगे। दो दिन चली बैठक में सम्पर्क प्रमुख डॉ. अवतार शास्त्री को अगामी महाकुंभ मेले का संयोजक नियुक्त किया गया। वह महाकुंभ में संगठन के सेवा कार्यों की देख रेख करेंगे।

समापन कार्यक्रम में जाने माने शिक्षाविद्, सेतु समुंद्रम, राम जन्मभूमि आन्दोलन से जुड़े हुए एवं पूर्व विधि एवं न्याय मंत्री **डॉ. सी. सुब्रामण्यन स्वामी** ने कहा खि समाज का देश की प्रगति में भारी योगदान है। सिख कौम एक बहादुर कौम है। सिखों की वीरता तथा बहादुरी के कारनामों से इतिहास भरा पड़ा है। सिखों ने हमेशा देश और कौम की भलाई के लिए बलिदान दिये है। देश की आजादी में सिखों के योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता। 1984 के नरसंहार में जो सिखों के साथ अपने ही देश में अन्याय हुआ उसको हम कभी भूल नहीं सकते। उन्होंने कहा कि दोषियों को सख्त से सख्त सजा दी जाए। तथा सिखों के जख्मों पर मरहम पट्टी लगाने के लिए पूरे हिन्दु समाज को उनका साथ देना चाहिए। सिखों का नैटवर्क दुनियाभर में फैला हुआ है। ऐसे में उन्हें पूरी दुनिया में देश, धर्म की रक्षा के लिए एकजुट होना होगा। उन्होंने कहा कि देश रहेगा तो धर्म, इसीलिए हमें राष्ट्र धर्म की रक्षा करनी होगी। डॉ. सुब्रामण्यन स्वामी ने एमरजेंसी की याद ताजा करते हुए बताया कि अपने आपको गिरफ्तारी से बचने के लिए उन्होंने सिख पगड़ी धारण की थी। इसीलिए उनके मन में पगड़ी के प्रति बहुत सम्मान है।

इस मौके पर पूर्व केन्द्रीय मंत्री डॉ. सुब्रामण्यन ने 'संगत संसार' पत्रिका का विमोचन किया। आए हुए अतिथियों को पगड़ी पहनाकर और सिरोपा भेंट कर सम्मानित किया गया। अन्त में राष्ट्रीय अध्यक्ष ने सभी का आभार जताया। इस समरोह में देश विदेश से 150 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। समारोप कार्यक्रम में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सम्पर्क प्रमुख माननीय इन्द्रेश कुमार, विहिप के अन्तर्राष्ट्रीय उपाध्यक्ष मा. बालकृष्ण नायक, दिल्ली सरकार के पूर्व मंत्री एवं विधायक स. हरचरन सिंह बल्ली, श्री जयभगवान अग्रवाल-उपनेता प्रतिपक्ष (नई दिल्ली), राष्ट्रीय सिख संगत के अविनाश जायसवाल, स. गजेन्दर सिंह-नैनीताल, डॉ. जसविन्दर सिंह-(अजमेर), श्री इन्दजीत नाहल (नई दिल्ली) श्री राकेश रिखी (रांची-झारखण्ड) स. देवेन्दर सिंह (हैदराबाद), कर्नल किशन सिंह जुनेजा (जम्मू), डॉ. कुलदीप अग्निहोत्री (धर्मशाला-हिमाचल प्रदेश) श्री कमल हाण्डा (मुम्बई), स. रणजीत सिंह (गुजरात), श्री बिहारीलाल

(भोपाल), स. मनजीत सिंह (लखनऊ) स. रघुबीर सिंह (पंजाब), अवकाश प्राप्त आई.ए.एस. श्री सोमप्रकाश (चण्डीगढ़), जी.एन.जी. ग्रुप के डायरेक्टर श्री सुरेन्दर अग्रवाल (गुड़गांव), अन्तर्राष्ट्रीय संत स्वामी विज्ञानानन्द जी (शिकागो-यू.एस.ए.) आदि गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया।

पाकिस्तान में स्थित हिन्दू/सिखों के पूजा स्थल व उनके रख-रखाव और दर्शन

-श्री अविनाश राय खन्ना, माननीय सदस्य-पंजाब राज्य मानवाधिकार आयोग एवं पूर्व सांसद

पाकिस्तान में हिन्दुओं और सिखों के कई सौ पूजा स्थल हैं। धार्मिक स्थलों की यात्राओं पर भारत व पाकिस्तान के साथ 1974 में एक द्विपक्षीय प्रोटोकॉल पर हस्ताक्षर किए थे। इस समय पाकिस्तान में स्थित 15 पूजा स्थल उक्त प्रोटोकॉल के अधीन है। जहां पर भारतीय जाकर पूजा कर सकते हैं-

1. गुरुद्वारा श्री ननकाना साहिब (रावलपिण्डी)
2. गुरुद्वारा श्री पंजा साहिब (रावलपिण्डी)
3. गुरुद्वारा श्री डेरा साहिब (लाहौर)
4. गुरुद्वारा श्री जनम स्थान (लाहौर)
5. गुरुद्वारा श्री दीवान खाना (लाहौर)
6. गुरुद्वारा श्री शहीद गंज (लाहौर)
7. गुरुद्वारा श्री भाई तारा सिंह (लाहौर)
8. छठे गुरु का गुरुद्वारा मोज़ांग (लाहौर)
9. श्री गुरु रामदास जी का जन्मस्थान (लाहौर)
10. गुरुद्वारा छेवीं पातशाही, मोज़ांग (लाहौर)
11. महाराजा रणजीत सिंह जी की समाधि (लाहौर)
12. श्री कटासराज सति धार्मिक स्थल (लाहौर)
13. शदानी दरबार पिताफी (लाहौर)
14. साधु वेला, खानपुर और मीरपुर माथेलो (लाहौर)
15. हजरत दाता गंज बख्श धार्मिक स्थल (लाहौर)

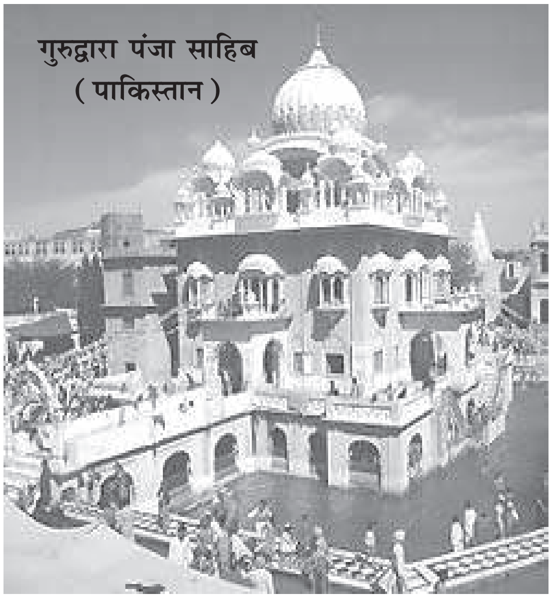

पकिस्तान की सरकार के प्रभार के अधीन जो पूजा स्थल है उनका रख-रखाव एकाकी ट्रस्ट प्रोपॅर्टी (ई.टी.पी.वी.), धार्मिक मामलों का मंत्रालय द्वारा किया जाता है। कुछ स्थलों का रख रखाव स्थानीय हिन्दु व सिख समुदायों द्वारा किया जाता है। ऐतिहासिक गुरुद्वारों की रख रखाव भी।

पाकिस्तान सिख गुरुद्वारा प्रबंधक समिति की सहायता से ई.टी.पी.वी. द्वारा किया जाता है। इसी तरह ऐतिहासिक महत्व के कुछ मंदिरों का रखरखाव भी ई.टी.पी.वी. द्वारा किया जाता है।

इन स्थलों की यात्रा धार्मिक स्थलों की यात्रा पर 1974 द्विपक्षीय प्रोटोकॉल के अनुसार की जाती है। तीर्थयात्रा दलों के सदस्यों की भ्रमण श्रेणी का बीजा जारी किया जाता है।

पाकिस्तान के पंजाब प्रांत के उकारा जिले के दीपलपुर में बाबा जसराये जी का पूज्य स्थल है, जो अब जर्जर हालात में हैं। साथ लगती सराये पर स्थानीय लोगों का कब्जा है, अभी भी उस सराये में जिन लोगों ने कमरे बनवाये थे उनकी नाम पटी लगी हुई है। उस स्थान की महत्व खला मल्होत्रा, कपूर, खत्री, समुदायों के लिए काफी महत्वपूर्ण है, क्योंकि चोटी उतारने की रस्म जो इन परिवारों में एक महत्वपूर्ण संस्कार है, एक स्थान से जुड़ी है। सरकार को इस स्थान के महत्व व भावनाओं को समझते हुए इस स्थान के उत्थान के लिये उचित कदम उठाने चाहिए।

● भोपाल राष्ट्रीय सिख संगत द्वारा जरूरतमंद व विधवाओं को सिलाई मशीन भेंट–

राष्ट्रीय सिख संगत म.प्र. के तत्वावधान में सिकलीगर समाज की निराश्रित व विधवा महिलाओं को स्वावलंबी बनाने के प्रयास के तहत हाथ की सिलाई मशीने बांटने की योजना बनाई गई है। इस योजना को मूल रूप देते हुए म.प्र. के देवास जिले के ग्राम सतवास से इस योजना की शुरुआत की गई। कार्यक्रम सतवास गुरुद्वारे में आयोजित किया गया। कार्यक्रम में श्री बिहारीलाल जी–राष्ट्रीय महामंत्री, स. कुलवंत सिंह सचदेवा–प्रदेश अध्यक्ष, स. जसपाल सिंह रील–प्रदेश सचिव विशेष रूप से उपस्थित थे। श्री बिहारीलाल के उद्बोधन हुआ जिसमें उन्होंने सिकलीगर समाज की महिला व पुरुष नौजवानों को सम्बोधित किया। अपने सम्बोधन में उन्होंने स्वावलंबी बनाने पर जोर दिया तथा प्रेरक कथा का विवरण सुनाया। सिकलीगर समाज की 15 महिलाओं को हाथ सिलाई मशीने सिकलीगर समाज के वरिष्ठ बुजुर्ग के आशीर्वाद से प्रदान की गई। दो मशीनें गुरुद्वारा साहिब में रखवाई गई। जिससे महिलाएं, बालिकाएं सिलाई कार्य सीख सकें। सिलाई सिखाने वाली महिलाओं को स. कुलवंत सिंह सचदेवा द्वारा आर्थिक सहायता पुरस्कार स्वरूप देने की घोषणा की गई। सम्पूर्ण कार्यक्रम गुरु महाराज की हजूरी में किया गया। कार्यक्रम उपरांत गुरुद्वारा ग्रंथी साहिब भजन सिंह द्वारा अरदास की गइ्र। जिसमें राष्ट्रीय सिख संगत के योगदान हेतु वाहिगुरुजी का ध न्यवाद किया गया। उपरांत प्रसाद विरतण किया गयां चाय का लंगर किया गया। हाथ की सिलाई मशीनें उपलब्ध कराने में स. कुलवंत सिंह जी का मुख्य योगदान रहा। आप सभी पाठकों से निवेदन है कि यदि आप इस यज्ञ में अपना योगदान देना चाहते है तो स. जसपाल सिंह रील–प्रदेश सचिव (09424926464), स. कुलवंत सिंह सचदेवा (09425792550), श्री बिहारी लाल (09826250980) से सम्पर्क करें।

– जारीकर्ता स. जसपाल सिंह रील

● जगराता–श्री शिव मन्दिर संस्थान–फरीदाबाद द्वारा एक विशाल जागरण का कार्यक्रम शनिवार दिनांक 21 नवम्बर 2009 को 1ई–डी पार्क में हुआ। ज्योति प्रचंड श्री राजकुमार भाटिया व श्री ब.डी. मित्तल ने की। मुख्य अतिथि श्री के.सी. लखवानी व श्रीमती नीलम मनचंदा रही। सर्वप्रथम महन्त औमनाथ शर्मा ने संचालन किया। उमा लहरी ने मां का गुणगान करके भक्तों का मन मोह लिया। एक बजे के बाद हिन्दुस्थान के मशहूर गायक श्री नरेन्दर चंचल द्वारा 4.30 तक मां माई का गुणगान हुआ जो दिव्य चैनल पर सारा कार्यक्रम डायरेक्ट टेलीकास्ट हो रहा था।

कार्यक्रम का आयोजन प्रधान बंसीलाल सिधाना, उपप्रधान श्री महेन्दर नागपाल, महासचिव श्री संजय अरोड़ा, कोषाध्यक्ष श्री सुरज प्रकाश बरेजा व जगराता प्रबधंक श्री राजकुमार सिधाना व समस्त कार्यकर्ताओं द्वारा हुआ।

व्यवस्था में पुलिस प्रशासन श्री महावीर दल के सदस्यों व भाटिया समाज ने की। चाय बिस्कुट आदि की सेवा राष्ट्रीय सिख संगत के स. सुरजीत सिंह, रवि सेठ, विपिन भाटिया, प्रदीप गुप्ता व श्री ओमप्रकाश छाबड़ा ने की। जल की सेवा छबील भाई घनैया सिंह जी के कार्यकताओं ने की। शक्ति सेवा दल की एम्बुलेंस भी मौके पर खड़ी थी। कार्यक्रम के बाद प्रशाद का वितरण में भी सिख संगत के सदस्यों के अलावा भी कई बंधुओं ने सेवा में बढ़–चढ़कर भाग लिया। कार्यक्रम में हजारों की संख्या में लोगों ने मां माई का गुणगान से मन की शक्ति प्राप्त की।